तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया

दीवाना





योग्यता सही जगह पर होनी चाहिये तभी वह काम आती है

साप्ताहिक भविष्य

२६ जुलाई से १ अगस्त १६७६ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : यह सप्ताह भी प्रायः पहले जैसा ही है, व्यर्थ के झंझटों से परेशानी, घरेलू समस्याओं से मन परेशान, परिवार मे सुख महयोग, काम समय पर बनते रहेंगे, और संघर्ष भी काफी करना पडेगा ।

वृष : सावधानी से रहें, झगड़े आदि से बचें, कुसंगति से हानि का भय है, अन्य दिनों में धन लाभ ठीक समय पर होता रहेगा, जिससें कुछ विशेष काम समय पर बनते रहेंगे, और संघर्ष भी काफी करना पड़ेगा ।

मिथुन : इस सप्ताह के दौरान विगत समय में किए कामों में शुभ अशुभ मिश्रितफल मिलते रहेंगे, कारोबारी कामों में सफलता मिलती रहेगी, लाभ भी अच्छा होगा, मित्र सहयोग देंगे, आय में वृद्धि ।

कर्क : सप्ताह दिलचस्प रहेगा, मनोरंजन आदि पर व्यय करेंगे और समय भी सानन्द व्यतीत होगा, साहस शक्ति बढ़ेगी, कोई महत्वपूर्ण काम बन जावेगा, यात्रा सावधानी से करें, परिश्रम सफल रहेगा ।

सिंह : पिछले दिनों की अपेक्षा यह सप्ताह अच्छा रहेगा, वैसे आर्थिक एवं घरेलू पक्ष से परेशानियां भी होंगी, आय-व्यय समान, सरकारी काम बन जाएंगे, विरोधी पक्ष से बचें, कोई नई चिन्ता पैदा होगी ।

कन्या : यह सप्ताह भी प्रायः पहले जैसा ही रहेगा, सेहत की संभाल जरूरी है वर्ना हालत काफी बिगड़ सकती है, स्थायी काम-धन्धों में सुधार एवं लाभ भी आशा अनुसार मिलेगा, परेशानी बढ़ेगी ।

तुला : व्यर्थ की समस्याएं पैदा होती रहेंगी, मानसिक परेशानी काफी रहेगी, अन्य दिनों में हालात ठीक चलेंगे, आर्थिक एवं व्यापारिक दृष्टिकोण से सप्ताह अच्छा रहेगा, आमदनी बढ़ेगी, समय अच्छा रहेगा ।

वृश्चिक : किसी विशेष काम के पूरा हो जाने से खुशी होगी, सप्ताह लाभप्रद रहेगा, परिश्रम करने पर शुभफलों की प्राप्ति होगी, आय में वृद्धि एवं व्यय यथार्थ, संघर्ष काफी आएंगे परन्तु सफलता मिलती रहेगी ।

धनु : व्यापारिक स्थिति में आप विशेष सुधार होता महसूस करेंगे, सप्ताह अच्छा है, कुसंगति से सावधान रहें, यात्रा हो तो सफल रहेगी, व्यय बढ़ेगा, अफसरों से परेशानी, काम पूरे न हो पायेंगे ।

मकर : वातावरण अनुकूल रहेगा, कोई महत्वपूर्ण काम पूरा हो जाने की आशा है, इन दिनों शुभ अशुभ मिश्रितफल की प्राप्ति होती रहेगी, महान कामों में भाग्य आपका साथ देगा, व्यापार में उन्नति ।

कुम्भ : यह सप्ताह लाभप्रद होने पर भी संघर्षमय रहेगा, व्यापारिक हालात प्रायः ठीक चलेंगे और लाभ भी अच्छा होता रहेगा, धार्मिक कामों में रुचि, मनोरंजन आदि पर व्यय, किसी बने काम में बिगाड़ ।

मीन : दिलचस्प होने के साथ-साथ इस सप्ताह के दौरान संघर्ष भी काफी आयेंगे, फिर भी भाग्य आपका साथ देगा और आप किसी भारी संकट में पड़ने से बच जायेंगे, यात्रा में कष्ट या हानि, शत्रु से बचें ।

आपके पत्र

दीवाना का अंक २३ मिला। पढ़कर अत्यन्त खुशी हुई। इसका प्रथम पृष्ठ देखा बड़ा मजा आया। काका के कारतूस, कृषि दर्शन, परोपकारी, बन्द करो बकवास, उपन्यास ठोकर, सिलबिल पिलपिल में प्रायश्चित, मोटू पतलू बहुत पसन्द आया। खेल खेल में, फैन्टम बहुत पसंद आया। क्यों और कैसे भी पसंद आये, अगर नेता फेरी लगायें तो, कहानी परलोक का एक दिन, मदहोश, सवाल यह है, कवितायें, गरीबचन्द की डाक भी पसन्द आया। आजकल दीवाना बड़ी तरक्की कर रहा है, हमारी आशा है अगला अंक इससे भी अच्छा और रोचक निकलेगा।

सुनिल कुमार गोगिया—गांधीधाम

अंक २२ पढ़ा, पढ़कर दिल प्रसन्न हो गया। दीवाना अब बहुत रोचक छपता है। मगर इसमें एक बात खटकती है। वह यह कि मोटू पतलू अब काफी उलझा हुआ आता है। वह अधिकतर जासूसी ही छपता है जब कि 'दीवाना' हास्य पत्रिका है। अगर पिलपिल सिलबिल रंगीन कर दिया जाये तो 'दीवाना' की प्रशंसा के लिए शब्द ढूंढने मुश्किल हो जायेंगे। अगर मैं कार्टून भेजूं तो क्या मुझे लिफाफे में टिकट भी रखनी पड़ेगी। कृपया बतायें।

बिनीत कुमार शर्मा—दिल्ली

जी हां, प्रत्येक छपने वाली प्रेषित सामग्री के साथ उसकी सूचना के लिए अपना पूरा पता लिखा व डाक टिकट लगा लिफाफा भेजना जरूरी है। —सं०

अंक २२ मिला। मुख पृष्ठ पर चिल्ली की आंखों में टेलीविजन फिट देख कर बड़ी हँसी आई। कार्टूनों के लिए धन्यवाद। दीवाना के अन्दर आजकल 'चिल्ली लीला' नहीं दिखाई दे रही है। सवाल यह है' तो एकदम छूमंतर हो गया है। अगर यही हालत रही तो मैं आपके ऊपर आयोग बिठा दूंगा जिससे आपको 'चिल्ली लीला' और सवाल यह है' फिर दिखाने पड़ेंगे। शायद आपको पता नहीं कि मेरे नाना के पापा के परदादा भूतपूर्व राष्ट्रपति थे। उनकी आज भी चलती है। फिर में भी बहुत खुन्दक वाला बन्दा हूँ।

कुलभूषण, बंसल—नई दिल्ली

आपको आयोग बैठाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, सवाल यह है हाजिर है। -सं०

आज ही मैंने दीवाना पढ़ा, पढ़कर बहुत खुशी हुई। वैसे में दीवाना का बहुत शौकीन पाठक हूँ। दीवाना अंक नम्बर १८ में सिलबिल-पिलपिल, मोटू पतलू, और कहानी ठोकर से मैं बहुत प्रभावित हूँ। मैं दीवाना का वार्षिक ग्राहक बनना चाहता हूँ। इसके लिए मैं क्या करूँ? आप कृपया कर मुझे जानकारी देवें। मेरी शुभ कामना है कि दीवाना हमेशा चटपटा रहे।

बिजय बहादुर सिंह ठाकुर— भोपाल

वार्षिक ग्राहक बनने के लिए आप मनिआर्डर द्वारा ४८ रु० हमारे पास भेज दीजिए। —सं०

सत्यपाल बधावन 'कुकु'—बख्तरासगढ़

अंक २२ प्राप्त हुआ। चिल्ली का दूरदर्शन उत्तम रहा। मैं अपने बचपन से ही 'दीवाना' का दीवाना रहा हूँ। फिलहाल उसी अंक के 'फिल्मी शीर्षक' ऐंसे भी फिर होते हैं और लम्बी नाक के दीवाने प्रयोग' करने के बाद मैं 'जूड़ी कराटे कैसे सीखे' के लेखक का नाम जानना चाहता हूँ। मुझे ताजुब है कि ऐसे महान लेखक और जूड़ो-कैराटे के ज्ञाता का नाम अभी तक प्रकाशित नहीं किया। लेखक को मेरी ओर से बधाई, साथ ही आपको भी। मेरी प्रार्थना इस स्तम्भ को बंद न करें वरना पाठकों का अभ्यास अधूरा रह जायेगा।

मुख पृष्ठ पर

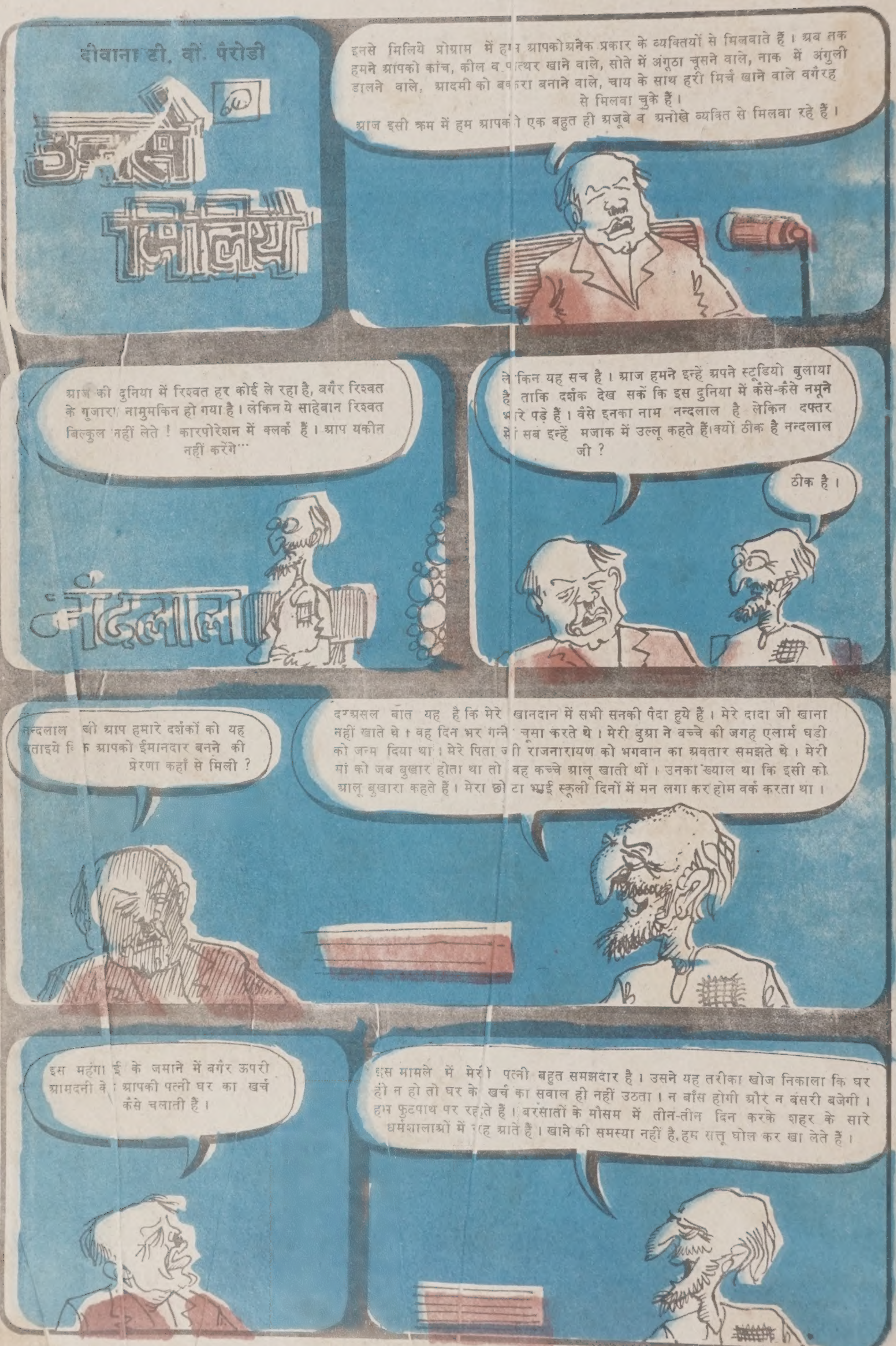
पाइप से नारियल को
पीना मुश्किल है काम
थोड़ा थोड़ा पीने में तो
न हो जाए जुकाम
न हो जाए जुकाम
इस में स्क्रू टैप लगाया
जब भी जितना चाहा
गिलास रख, टैप घुमाया

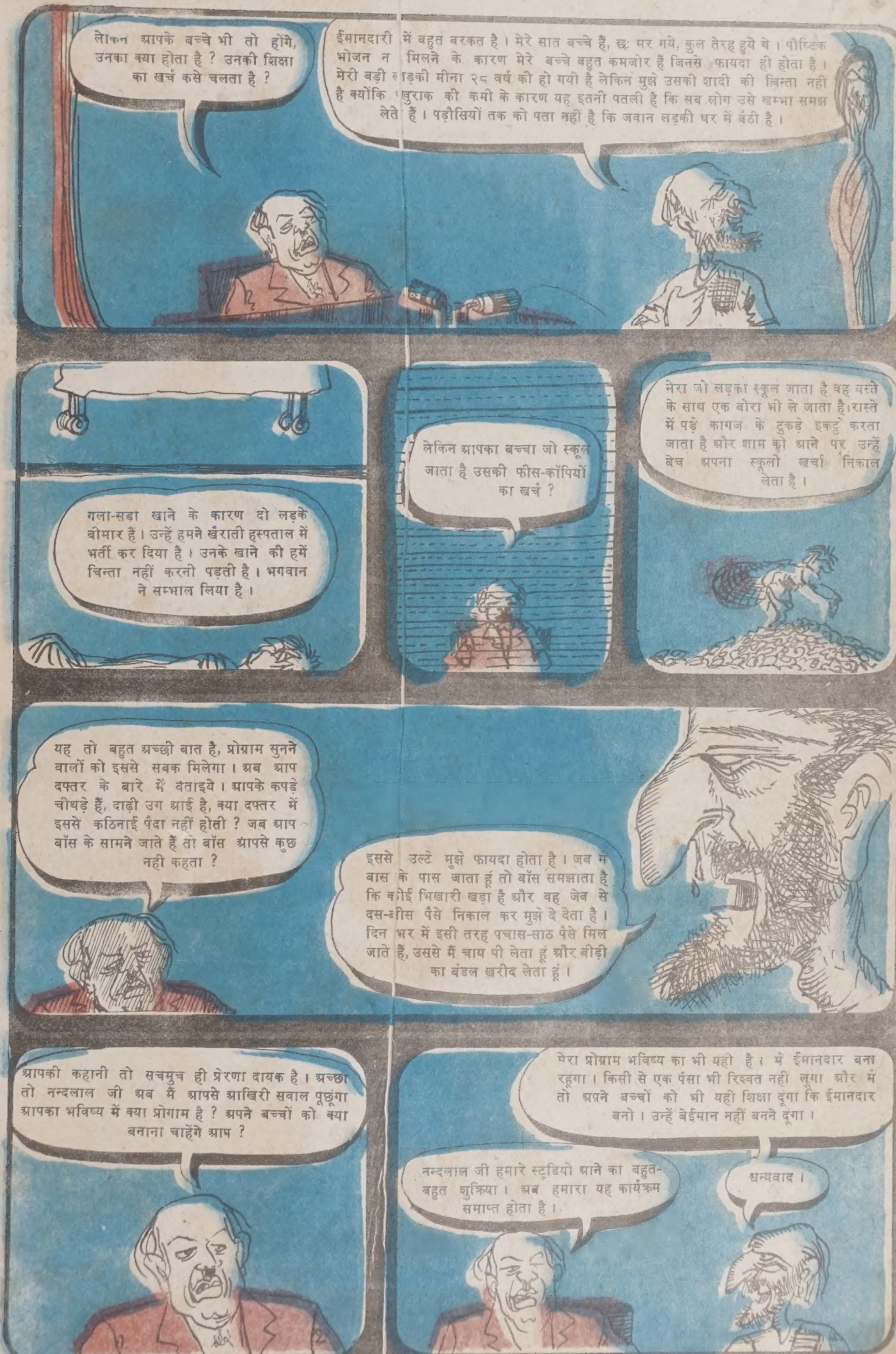
दीवाना

अंक : २७, २६ जुलाई से १ अगस्त १६७६ तक
वर्ष : १५

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दा
छमाही: २५ रु० वार्षिक: ४८ रु० द्विवार्षिक: ९५ रु०


दीवाना टी. वी. पैरोडी
इनसे मिलिये
इनसे मिलिये प्रोग्राम में हम आपको अनेक प्रकार के व्यक्तियों से मिलवाते हैं। अब तक हमने आपको कांच, कील व पत्थर खाने वाले, सोते में अंगूठा चूसने वाले, नाक में अंगुली डालने वाले, आदमी को बकरा बनाने वाले, चाय के साथ हरी मिर्च खाने वाले वगैरह से मिलवा चुके हैं।
आज इसी क्रम में हम आपको एक बहुत ही अजूबे व अनोखे व्यक्ति से मिलवा रहे हैं।
आज की दुनिया में रिश्वत हर कोई ले रहा है, बगैर रिश्वत के गुजारा नामुमकिन हो गया है। लेकिन ये साहेबान रिश्वत बिल्कुल नहीं लेते! कारपोरेशन में क्लर्क हैं। आप यकीन नहीं करेंगे…
नंदलाल
लेकिन यह सच है। आज हमने इन्हें अपने स्टूडियो बुलाया है ताकि दर्शक देख सकें कि इस दुनिया में कैसे-कैसे नमूने भरे पड़े हैं। वैसे इनका नाम नन्दलाल है लेकिन दफ्तर में सब इन्हें मजाक में उल्लू कहते हैं। क्यों ठीक है नन्दलाल जी?
ठीक है।
नन्दलाल जी आप हमारे दर्शकों को यह बताइये कि आपको ईमानदार बनने की प्रेरणा कहाँ से मिली?
दरअसल बात यह है कि मेरे खानदान में सभी सनकी पैदा हुये हैं। मेरे दादा जी खाना नहीं खाते थे। वह दिन भर गन्ने चूसा करते थे। मेरी बुआ ने बच्चे की जगह एलार्म घडी को जन्म दिया था। मेरे पिता जी राजनारायण को भगवान का अवतार समझते थे। मेरी मां को जब बुखार होता था तो वह कच्चे आलू खाती थीं। उनका ख्याल था कि इसी को आलू बुखारा कहते हैं। मेरा छोटा भाई स्कूली दिनों में मन लगा कर होम वर्क करता था।
इस महंगाई के जमाने में बगैर ऊपरी आमदनी के आपकी पत्नी घर का खर्च कैसे चलाती हैं।
इस मामले में मेरी पत्नी बहुत समझदार है। उसने यह तरीका खोज निकाला कि घर ही न हो तो घर के खर्च का सवाल ही नहीं उठता। न बाँस होगी और न बंसरी बजेगी। हम फुटपाथ पर रहते हैं। बरसातों के मौसम में तीन-तीन दिन करके शहर के सारे धर्मशालाओं में रह आते हैं। खाने की समस्या नहीं है. हम सत्तू घोल कर खा लेते हैं।


लेकिन आपके बच्चे भी तो होंगे, उनका क्या होता है ? उनकी शिक्षा का खर्च कसे चलता है ?
ईमानदारी में बहुत बरकत है। मेरे सात बच्चे हैं, छः मर गये, कुल तेरह हुये थे। पौष्टिक भोजन न मिलने के कारण मेरे बच्चे बहुत कमजोर हैं जिनसे फायदा ही होता है। मेरी बड़ी लड़की मीना २८ वर्ष की हो गयी है लेकिन मुझे उसकी शादी की चिन्ता नहीं है क्योंकि खुराक की कमी के कारण यह इतनी पतली है कि सब लोग उसे खम्भा समझ लेते हैं। पड़ौसियों तक को पता नहीं है कि जवान लड़की घर में बैठी है।
गला-सडा खाने के कारण दो लड़के बीमार हैं। उन्हें हमने खैराती हस्पताल में भर्ती कर दिया है। उनके खाने की हमें चिन्ता नहीं करनी पड़ती है। भगवान ने सम्भाल लिया है।
लेकिन आपका बच्चा जो स्कूल जाता है उसकी फीस-कॉपियों का खर्च ?
मेरा जो लड़का स्कूल जाता है वह बस्ते के साथ एक बोरा भी ले जाता है। रास्ते में पड़े कागज के टुकड़े इकट्ठे करता जाता है और शाम को आने पर उन्हें बेच अपना स्कूली खर्चा निकाल लेता है।
यह तो बहुत अच्छी बात है, प्रोग्राम सुनने वालों को इससे सबक मिलेगा। अब आप दफ्तर के बारे में बताइये। आपके कपड़े चीथड़े हैं, दाढ़ी उग आई है, क्या दफ्तर में इससे कठिनाई पैदा नहीं होती ? जब आप बॉस के सामने जाते हैं तो बॉस आपसे कुछ नही कहता ?
इससे उल्टे मुझे फायदा होता है। जब मैं बास के पास जाता हूं तो बॉस समझता है कि क ोई भिखारी खड़ा है और वह जेब से दस-बीस पैसे निकाल कर मुझे दे देता है। दिन भर में इसी तरह पचास-साठ पैसे मिल जाते हैं, उससे मैं चाय पी लेता हूं और बीड़ी का बंडल खरीद लेता हूं।
आपकी कहानी तो सचमुच ही प्रेरणा दायक है। अच्छा तो नन्दलाल जी अब मैं आपसे आखिरी सवाल पूछूंगा आपका भविष्य में क्या प्रोगाम है ? अपने बच्चों को क्या बनाना चाहेंगे आप ?
मेरा प्रोग्राम भविष्य का भी यही है। मैं ईमानदार बना रहूंगा। किसी से एक पैसा भी रिश्वत नहीं लूंगा और मैं तो अपने बच्चों को भी यही शिक्षा दूंगा कि ईमानदार बनो। उन्हें बेईमान नहीं बनने दूंगा।
नन्दलाल जी हमारे स्टूडियो आने का बहुत-बहुत शुक्रिया। अब हमारा यह कार्यक्रम समाप्त होता है।
धन्यवाद।

काका के कारतूस



प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

राकेश कुमार अरोड़ा, मलेरकोटला

प्र० : मैं अपनी प्रेमिका को अपना दिल दिखाना चाहता हूं ?

उ० : 'एक्सरे' करवाइए, दिल के बिल का आप,
फोटो उसको दिखा दो, होय मामला साफ।

विमल किशोर बरनवाल, लखीमपुर

प्र० : आजकल के युवक सच्ची मुहब्बत की बजाय सैक्स पर ही अधिक ध्यान क्यों देते हैं ?

उ० : जनता पार्टी लगादे, अगर सैक्स पर टैक्स,
रहे ऊपरी मोहब्बत, भाग जायेगा सैक्स।

सुरजीतसिंह लाम्बा, एन० आई० टी० फरीदाबाद

प्र० : मैं शादी करना चाहता हूं, कोई लड़की नजर में है क्या ?

उ० : बच्ची है पच्चीस वर्ष की, वह मीठी गुड़धानी है,
दोष नहीं कुछ उसमें केवल एक आंख से कानी है।

देवदास 'मयंक', बैंगलोर (कर्नाटक)

प्र० : इंदिरा गांधी और अर्स के टकराव पर आपके विचार ?

उ० : मुख्यमंत्री बनाए, इंदिरा ने ही अर्स,
नेकी का बदला बदी, तनिक न आया तर्स।

मनोज गिरि, हजारी बाग (बिहार)

प्र० : इन्सान सोचता कुछ है और होता कुछ है। ऐसा क्यों ?

उ० : मनोवाँछित चाहना, यदि पूरी हो जायँ,
चपरासी औ' संतरी, मंत्री बन इठलायँ।

गुरमेल सिंह, जगराव (लुधियाना)

प्र० : काँग्रेस वालों का अब क्या भविष्य दिखाई देता है ?

उ० : कांग्रेस दोनों अगर, होवें एकाकार,
गिरे फूट के कूप में, वर्तमान सरकार।

कमल रैलन, सिरसा (हिसार)

प्र० : सच्चे प्यार की क्या परिभाषा है काका जी ?

उ० : प्रेयसि चप्पल तान कर, मार देय फटकार,
प्रेमी चप्पल चूमले, यह है सच्चा प्यार।

महेन्द्र शर्मा 'स्वप्न', चाईबासा

प्र० : जब सब कुछ विधाता के भरोसे छोड़ दिया जाए तो ?

उ० : भाग्य भरोसे पड़े हैं, गढ़े हुए ज्यों ठूंठ,
ऐसे निष्क्रिय व्यक्ति से, जाय विधाता रूठ।

चन्द्रशेखर गोस्वामी (हरिद्वार)

प्र० : पति-पत्नी में अविश्वास के भाव पैदा हो जाएं तो ?

उ० : कभी टूट सकता नहीं, यह नाता अनमोल,
अविश्वास की गाँठ को, प्यार-प्रीत से खोल।

जोगेन्द्र पाल पम्पा, लुधियाना

प्र० : उधार लेकर मौज उड़ाना, ठीक है क्या ?

उ० : नाशवान संसार, नाम कुछ रोशन कर जा,
मरना तो निश्चित है, करजा लेकर मर जा।

पवन खत्री, (इन्दौर)

प्र० : काका जी, आप अपनी वसीयत में क्या लिखेंगे ?

उ० : डाक टिकिट मेरी छपें, नहीं तनिक भी चाव,
मार-मार कर मोहर को, कर दें तन पर घाव।
कैसा भी हो पाई या चौराहा-स्ट्रीट,
मूर्ति खड़ी करना नहीं, करें कबूतर बीट।

मदन किशोर, (रायपुर)

प्र० : गरीब लड़कियों की सबसे बड़ी मुसीबत आजकल क्या है ?

उ० : अर्थ हीन पापा दुखी, धनिक मोयँ सुख-सेज,
बहू सताई जायं जो लाए नहीं दहेज।

एम. आर. कल्याण, बहादुरगढ़ (रोहतक)

प्र० : भगवान कहाँ रहते हैं, उनका ठीक-ठीक पता बता दीजिए ?

उ० : मंदिर में प्रभु नहीं मिलेंगे, जाओगे तो पछताओगे,
मंत्रीजी की कोठी पर या फिल्मी बंगलों में पाओगे।

मौहम्मद असलम सबरंगवाला, (जोधपुर)

प्र० : गम की दुनिया है ये, सुख चैन न होता हैन्डिल,
प्यार जिससे भी किया, उसने दिखाई सैन्डिल ?

उ० : प्यार के ढेर लगे हैं फजूल गम का बहम,
प्यार का सलीका भी चाहिए 'असलम'।

अशोक कुमार जैन, बेरमो (गिरिडीह)

प्र० : काका जी, आपको कोई बीस वर्ष की कन्या दिलवा दी जाए तो ?

उ० : पढ़ी लिखी हो सुन्दरी, चले लचीली चाल,
शादी अपने पौत्र से, करवा दें तत्काल।

अविनाश मिश्र, आगरा

प्र० : शादी के बाद पत्नी का प्रेम कब तक प्राप्त होता है ?

उ० : चंद्रमुखी इक साल तक, सूर्यमुखी दो साल,
फिर होकर ज्वालामुखी, करे हाल बेहाल।

प्रयाग एच० चौहान, अहमदाबाद

प्र० : प्यार करने का कोई सरल तरीका बताइए काका ?

उ० : झूठी सच्ची प्रशंसा, किया करो दिन रात,
'थैंक्यू डार्लिंग' बोलना, अगर मारें दे लात।

चन्द्रभान 'अनाड़ी', जबलपुर

प्र० : लड़कियाँ, हँसते समय अपने मुंह पर हाथ क्यों रख लेती है ?

उ० : चतुर छोकरी जानती, तौर-तरीक-मलक,
किसी छोकरे तक नहीं, उड़कर पहुंचे थूक।

नारायण मूंदड़ा, हरदा (म. प्र.)

प्र० : रास्ता चलती सुन्दरी को रोकना हो तो क्या करें ?

उ० : डाल दीजिए सड़क पर, दस रुपए का नोट,
रुक जाएगी खुशी से, फड़कें उसके होंठ।

धनपत सिंह सोलंकी, कानपुर

प्र० : व्यापारियों का बिक्री कर विरोधी आंदोलन फेल क्यों हो गया ?

उ० : व्यापारी सुख चाहते, डरें देखकर जेल,
सेल टैक्स नहीं हट सका, खेल हो गया फेल।

राजेश पप्पू रिपन, लुधियाना (पंजाब)

प्र० : औरत को देवी का रूप कब माना जाता है ?

उ० : लक्ष्मी देवी मानते, दे निकाल कर नोट,
चंडी देवी तब दिखे, हममें हो कुछ खोट।

अपने वाक्य केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

रैगिंग क्यों करें?

आप बड़े होकर एम. पी अथवा एम. एल. ए. बने तो रैगिंग विद्या आपके बड़े काम आयेगी, विरोधी पार्टी वालों की रैगिंग ही करनी पड़ती है।



रैगिंग से जीते बच कर आप निकले तो जिन्दगी भर मार नहीं खायेंगे। भयानक से भयानक जानवर का भी आत्म-विश्वास के साथ मुकाबला कर सकेंगे यहां तक की बीबी का भी।





आप लड़की हैं तो रैगिंग का अनुभव आपके लिये आगे चल कर लाभदायी सिद्ध होगा। जब आपकी बहू आयेगी तो दहेज कम लाने का बहाना लेकर आप रैगिंग कर-करके आत्म हत्या करने पर मजबूर कर सकेंगी।

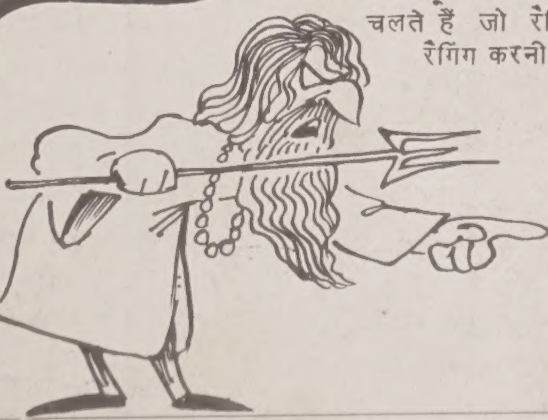


रैगिंग में टेबल पर खड़े होकर आपको कहना पड़ता है "मैं गधा हूं।" जब आप मर कर यमराज के सामने हिसाब देंगे तो कम से कम यह तो दावा कर सकते हैं कि आप जीवन में एक बार तो सच बोले।

होस्टल रैगिंग में कपड़े भी उतारने पड़ते हैं। नंगे होने का संकोच दिल से निकल जायेगा। महंगाई जिस तरह बढ़ रही है उससे यह तो पक्का ही है कि महँगाई एक दिन सबके कपड़े उतार लेगी।



शिक्षा पूरी होने के बाद अगर आपको नौकरी नहीं मिलती तो आप गांव में जाकर ओझा का काम कर सकते हैं। किसी पर से भूत-प्रेत उतारने के लिये वही हथकंडे चलते हैं जो रैगिंग में चलते हैं, मरीज की खूब रैगिंग करनी पड़ती है।



मोटू पतलू

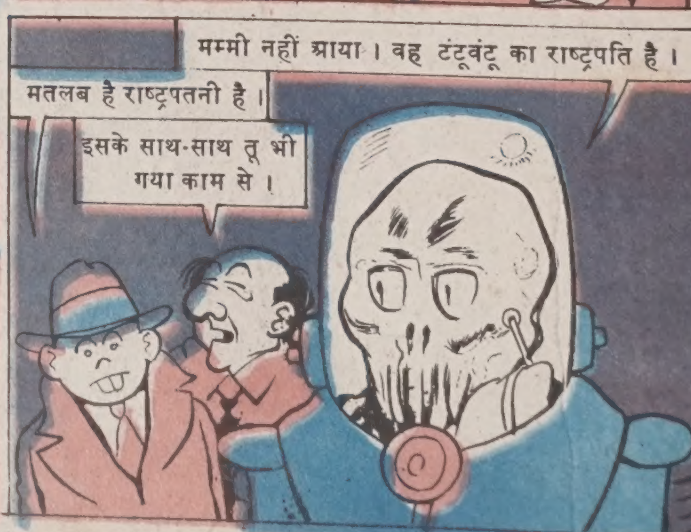
पिछले दिनों स्काईलैब के गिरने की बहुत चर्चा थी। उन दिनों घसीटाराम ने आसमान से गिरता आग का एक बहुत बड़ा गोला देखा तो समझा कि स्काईलैब गिर रही है। आग का गोला नीचे आता हुआ बहुत बड़ा होता चला गया और फिर एक अन्तरिक्ष यान में बदल गया। मोटू पतलू ने घसीटा राम को जंगल की ओर भागते और अन्तरिक्ष यान को उसका पीछा करते देख लिया था। उन्होंने समझा स्काईलैब जंगल में गिरी है और घसीटाराम उसके नीचे आकर कुचला गया है। मोटू, पतलू, डाक्टर झटका और चेला राम जंगल में पहुंचे तो वहां घसीटाराम का कुछ पता नहीं था। वे अन्तरिक्ष यान के अन्दर गये तो उसके इंजन चालू थे। उनकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि अगर यह स्काईलैब है तो इसके इन्जन तो ठप होने चाहिए थे। मोटू पतलू वापस अपने घर पहुंचे तो पता चला कि घसीटा राम वहाँ अपने एक नये मित्र के साथ बिराजमान है। घर के अन्दर गये तो यह देख कर उनके पांव तले से जमीन निकल गई कि घसीटाराम किसी दूसरे उपग्रह के प्राणी को मित्र बनाकर अपने साथ ले आया है। और अब यह समझने में उन्हें अधिक देर नहीं लगी कि जिसे वे स्काईलैब समझ रहे थे, वह वास्तव में किसी उपग्रह से आई उड़नतश्तरी है। इसके बाद के हंगामें आगे प्रस्तुत हैं।













यह मेरा याड़ी है। इसे मैं लाया हूं। तुम इस से बहस क्यों कर रहे हो।
तू बहस कर ले और इस मुसीबत को अपने घर में पाल ले। इसे यहाँ लेकर क्यों आया है।
माल दिखाने के लिए।
कैसा माल दिखाने के लिए ?
तुम्हें दिखाने के लिए। मैंने तुम सबको इसके हाथ बेच दिया है।
क्या बकवास कर रहे हो।
यह मूंछों वाली छोरी ठीक कह रही है। जब मैं ने इसे जंगल में से पकड़ा तो दो बात करते ही मैं समझ गई कि जिस काम के लिए मैं इस धरती पर आई हूं उसे यह पूरा कर देगी।
यहाँ किस काम के लिए आई हो तुम।
इस धरती के बहुत अकलमन्द और बहुत बेवकूफ आदमी पकड़ के ले जाने के लिए।
अरे बाप रे। यह हमारा अपहरण करने आया है।
और इसे यहां पकड़ कर लाया है घसीटा राम।
पकड़ने का क्या मतलब है, मैंने तुम्हें बेचा है। कोई तुम्हारी दो कौड़ी भी नहीं देता था। इसने एक-एक आदमी के बदले में मुझे दो-दो हीरे देने का वादा किया है।
मैंने इस झाड़ जैसी मूंछों वाली को पकड़ा, तो दो बात करते ही समझ लिया कि दुनिया में इससे बड़ा मूर्ख और कोई नहीं हो सकता।
सबसे बड़ा मूर्ख तो मिल गया। सबसे बड़े अक्लमंदों के लिए तुम मोरारजी देसाई और जयप्रकाश नारायण को पकड़ कर क्यों नहीं ले जाते ?


हमें हर बात का पता है। यह दोनों कितने अकलमन्द हैं हमें पता है। इन्हें अपने साथ ले जा कर हमें टटूवंटू की ईंट से ईंट नहीं बजवानी है।
तो फिर हम किस्मत के मारे रह गये है अपहरण के लिए।
वहीं, इससे पहले भी हम यहाँ से अपनी पसन्द की औरतें उठा कर ले जाती रही हैं।
जो बची हैं, उन्हें भी ले जाएंगी।
आखिर इस अपहरण के पीछे रहस्य क्या है
माई डीयर औंधी खोपड़ी?
हमारे टटूवंटू पर न बहुत अकलमन्द हैं और न बहुत मूर्ख। अकलमन्दों को हम सफाई कर्मचारी और सड़के साफ करने वाला जमादार बनाते हैं।
हमें भंगी बनाओगे तुम।
हमारी सड़के गंदी रहती हैं। बाथरूम सड़ते रहते हैं और हम जानती हैं कोई अकलमन्द ही वहाँ की सफाई का काम बहुत अच्छी तरह कर सकता है
और मूर्ख ?
मूर्खों को हम ऊँची पदवी दे कर उनसे अपनी सरकार चलवाते हैं क्योंकि हमें पता है, मूर्ख अपनी गद्दी बचाये रखने के लालच में हमारी हर बात मानते रहेंगे।
ऊँची गद्दी, ऊँची पदवी। सरकार चलाने वाला। बीस साल भाड़ झौंकने पर अब एक सच्चा कदरदान मिला है मुझे।
और अगर हम तुम्हारे साथ न जायें तो तुम क्या कर लोगे हमारा ?
जाओगे कैसे नहीं मैंने जुबान दी है इसे।
बिल्कुल कच्चा हूँ। मेरी जुबान तो मिट्टी की बनी हुई है। इस जुबानदराज चूहे की जुबान काट लो।
अभी कहाँ दी है जुबान? लो, अपनी जुबान काटो और मुझे दे दो।
तुम्हारे यहां ऐसे जुबान दी जाती है ?
हाँ, मुझे देखना है तुम जुबान के कितने पक्के हो ?
?
हां, लाओ, यह खंजर मुझे दो।

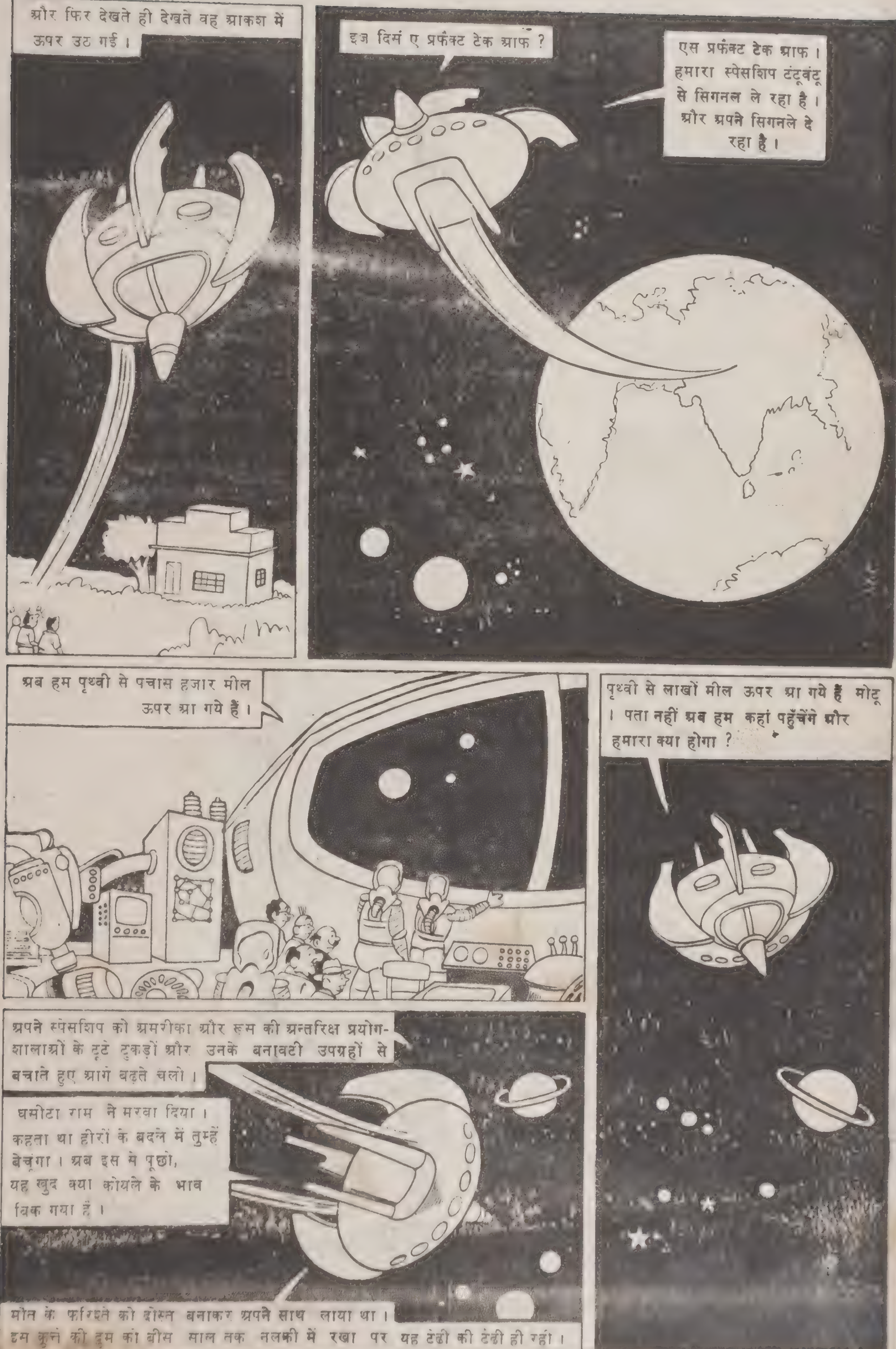


खंजर लेकर चेलाराम ने आव देखा न ताव उस औंधी खोपड़ी को समाप्त करने के लिए उसने पूरी ताकत और सही निशाने से हमला कर दिया।
खंजर उसकी छाती से टकराया और उसका लोहे का फना गत्ते की तरह मुड़ गया।
मुझे मारना इतना आसान नहीं जितना तुम समझ रहे हो।
खंजर और बन्दूक की गोली क्या, तोप के गोले भी मुझसे टकरायेंगे तो चूर-चूर हो जायेंगे।
हमारे छोटे-छोटे हथियारों के सामने तुम्हारे बड़े-बड़े हथियार खिलौना है इस 'हाईपावर लैसर गन' की शक्ति क सामने।
इस शक्तिशाली लैसर बीम से मैं तुम्हार जहाज़ तबाह कर सकती हूं।
तुम्हारे जहाजों को तुम्हारे ही नगरों पर गिरा कर तबाही मचा सकती हूं।
अरे मार
मेरी विनाशकारी लेंसर बीम की शक्ति के आगे तुम्हारे एटम बम और हाइड्रोजन बम कुछ भी नहीं। कुछ समय बाद जब इस धरती पर हमारा हमला होगा, तो सब देख लेना।
मै मरा!


हमारा पहला हमला तुम्हारे पानी के जहाजों पर होगा
तुम्हारे जहाज़ों को हमारे यंत्र कागज की नाव की तरह डबो देंगे।
वे अब धरती की ओर बढ़ रहे हैं सर!
मैं ने उन का इलाज सोच लिया है!
फौजें लेकर उन पर चढ़ाई कर दो
शाबाश। आगे बढ़ो!
अटैक!
वह देखो। वहां उनकी उड़न-तशतरियां उतरी हैं!
उन पर टैंकों से हमला कर दो
पर तुम्हारे टैंकों को हमारे शक्तिशाली यंत्र भून कर रख देंगे
उन की धज्जियां उड़ा देंगे।


मजाक समाप्त हुआ। अब मेरे जिस्म से बिजली की ऐसी करंट फूट रही है कि कोई भी चीज मुझ से दो मीटर की हद से आगे आई तो जल कर राख हो जायेगी। मेरे पास आना मौत के मुंह में जाना है।
अब हम अपनी मंजिल की ओर चलती हैं। अपनी धरती को आखरी प्रणाम कर लो।
यह कहकर उस ने अपनी लैसर बीम गन का घोड़ा दबा दिया।
कमरा ऐसे हिल रहा है जैसे कोई भयंकर भूकम्प आ गया है।
बाहर लोगों ने देखा मोटू पतलू के मकान की बुनियादें उखड़ रही थी और वह हवायें ऊपर उठने लगा था।
लगता है कोई ऐसा बवंडर आया है, जैसा पिछले साल किंग्जवे कैम्प में आया था।
हां, उसमें मकानों की छतें उड़ गई थी और थ्रीवीलर स्कूटर उड़कर पेड़ पर चढ़ गये थे।
इसी प्रकार मोटू पतलू का मकान बगूले के चक्करों में फंस कर आकाश में उड़ गया है।
तुम बगूले और बवंडर की बात कह रहे हो, यहां तो हवा से एक टिनका भी नहीं हिल रहा है।
यह चक्कर क्या है ?


पूरा मकान हैलीकाप्पर की तरह उड़ा जा रहा है । इस आड़ू से कहो बीम गन बन्द कर दे ।
इतनी ऊँचाई से बन्द की तो नीचे जा कर ऐसे पड़ेंगे कि मकान और हम सब खील-खील हो जाएंगे ।
मोटू पतलू का हैलीकाप्टर बना मकान अब वहां पहुँच कर नीचे उतरता जा रहा था, जहां टंटूवंटू से आई उड़न-तश्तरी उतरी हुई थी ।
चलो, सीधे हमारे स्पेसशिप में चले जाओ ।
कोई एक शब्द भी बोला तो जला कर राख कर दूंगा ।
उड़नतश्तरी का दरवाजा अब बन्द हो गया था । मोटू पतलू के उड़ते मकान का पीछा करते हुए लोगों की भीड़ वहां पहुँची तो उड़न तश्तरी के सभी इंजन चालू हो चुके थे और वह अन्तरिक्ष में उड़ान भरने के लिए पर तोल रही थी ।



ग्रागमी अंक में फिर मुलाकात होगी।

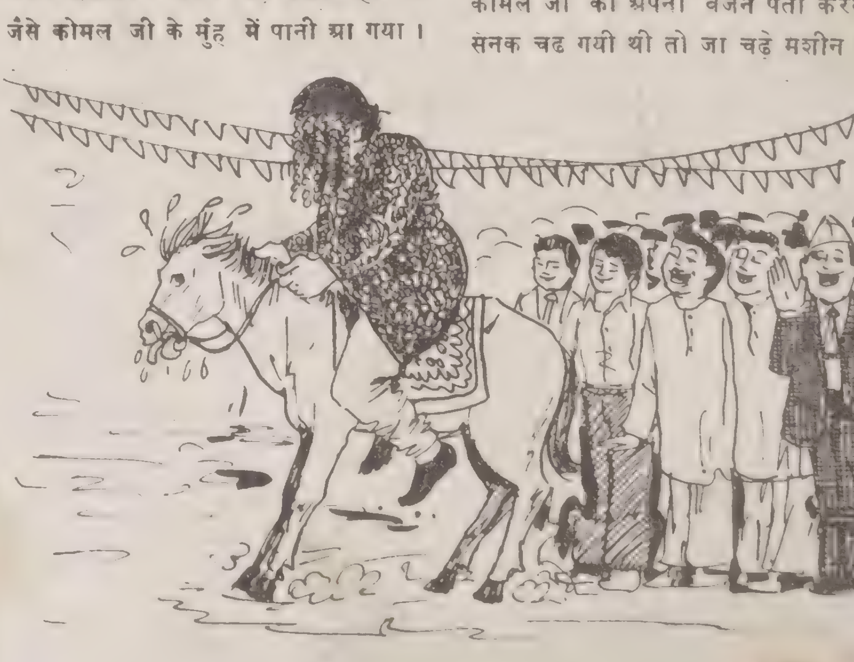
मियाँ टंकीमल

—विश्व रमन 'निर्मल'

आज लाला घोंचूमल जी के यहां बड़ी चहल-पहल थी, क्योंकि आज उनके इकलोते सुपुत्र कहिए अथवा कुपुत्र चिरंजीव कोमल कुमार जी की शादी थी। बहुत कोशिश के बाद उन्हें यह दिन देखने को नसीब हुआ था। बेचारे कोमल जी को कोई पसन्द करे, यह बात तो बहुत बाद की है, यदि उन्हें एक बार कोई देख भी लेता था, तो पाँच बार नमस्कार करके वापस भाग जाता था। वैसे तो लाला घोंचूमल लखपति थे, परन्तु करें क्या उनके लड़के को कोई पसन्द ही नहीं करता था, क्योंकि उनके सुपुत्र बस ! नाम ही के कोमल कुमार जी थे, बाकी कहीं से भी ऐसा नहीं लगता था कि यह नाम उनको सुशोभित करे। उनके दोस्त उनको प्यार से टंकीमल कहा करते थे। आ हा……यह नाम तो जैसे उनके शरीर को चार चांद लगा देता था। यह नाम उनको उनकी काबलियत देखकर ही दिया गया था। लाला घोंचूमल ने उन्हें पाँचवी तक पढ़ाकर स्कूल जाना बंद करवा दिया था, आखिर पढ़ने की जरूरत भी क्या थी, घर में पैसे की कमी तो थी नहीं। भगवान जी ने कोमल जी के साथ बहुत अन्याय किया था, परन्तु इसमें बेचारे भगवान का भी कोई कसूर नहीं था क्योंकि जिस वक्त भगवान कोमल जी को बना रहे थे, उस वक्त स्वर्ग में जातिवाद को लेकर काफी विवाद उठ खड़ा हुआ था। इसलिए भगवान ने सोचा क्यों न कोमल जी के द्वारा ही जातिवाद प्रथा को खत्म किया जाये। बस ! भगवान ने कोमल जी के लिए पैर का नमूना लिया हनुमान जी से, हाथ के लिए रीछ को चुना, पेट उन्होंने हाथी का दिया शक्ल के सामने बंदर बैठा था। इन सबको टैस्ट-ट्यूब में डालकर रवाना कर दिया लाला घोंचूमल जी की तरफ। क्योंकि तभी भगवान के सैक्रेटरी ने बताया था कि घोंचूमल जी का नाम लिस्ट में सर्वप्रथम है। यह है दास्तान प्यारे कोमल जी उर्फ टंकीमल जी की। इसी कारण लाला घोंचू जी ने अपने सभी दरवाजे बड़े करवा लिए थे। आखिर कब तक कोमल जी को कष्ट दिए जाते, उनका काम ही यह था कि कभी किसी दरवाजे में फंस गए और कभी किसी में।

खैर, साहब एक दिन कुछ आदमी उन्हें फिर देखने के लिए आए। अब की बार घोंचूमल जी ने अपने सुपुत्र को कुछ ज्यादा सजाया हुआ था। परन्तु वही हुआ जो कि हर बार होता था, यानि कि स्पष्ट मना कर दिया। इधर कोमल जी जोर-जोर से रोने लगे। घोंचूमल जी घबराये, इस बार यह मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहते थे। उन्होंने समझा कर कहा, 'अरे साहब आप बैठिए तो सही, आखिर लड़के में क्या कमी है ? बस ! थोड़ा सा मोटा है तो क्या हुआ, विवाह के बाद जब बोझ पड़ेगा तो अपने आप हल्का हो जायेगा।' उनमें से एक आदमी ने कहा, चलिए जी हम मान लेते हैं कि सब कुछ ठीक हो जायेगा, लेकिन आप बताइये कितना देंगे।' 'यह आप क्या कह रहे हैं, देना तो आपको चाहिए, और आप मुझसे ही मांग रहे हैं, 'घोंचूमल जी ने चौंकते हुए कहा। अरे वाह छोड़िए पुरानी बातें, हम आपको इतनी सुंदर कन्या ऐसे ही नहीं देंगे। यदि दस हजार रुपया दे रहे हैं तो हमें यह रिश्ता मंजूर है।' और इसी के साथ उन्होंने लड़की का फोटो दिखाया। फोटो को देखते ही तो जैसे कोमल जी के मुंह में पानी आ गया। अपने लड़के की खुशी को देखते हुए उन्होंने यह शर्त भी मंजूर कर ली। लड़की को देखने की घोंचूमल जी ने जरूरत नहीं समझी। क्योंकि फोटो उनके सामने थी। पन्द्रह दिन के बाद की तारीख तय हो गई। बारात पास के गांव में ही जानी थी। दस हजार रुपए लेकर लड़की वाले चले गये।

बस ! आज वह शुभ दिन था, जब कोमल जी शादी-शुदा होने वाले थे। इस वक्त कोमल जी कमरे में बैठे अपने दोस्तों के साथ गपशप मार रहे थे। तभी किसी ने आकर खबर दी कि कोमल जी के मामा जी आये हैं। उनके दोस्तों ने उन्हें उठाकर खड़ा कर दिया। कहीं ऐसा न हो कि वह खड़े भी न हो पायें और उनकी बेइज्जती हो जाये। उनके मामा जी कमरे में आये और उनसे हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़े। इधर कोमल जी भी बड़े जोश के साथ हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़े। परन्तु अचानक एक चीख सुनाई दी। कोमल जी के कुछ भी समझ नहीं आया कि हुआ क्या ऐसा हुआ कि ज्योंही टंकीमल जी हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़े, उनके हाथ मिलने से पहले ही उनके पेट ने मामाजी से सम्पर्क स्थापित कर लिया और परिणाम स्वरूप उनके मामाजी उछल कर दीवार से जा टकराये। बड़ी मुश्किल से उनके दोस्तों ने मामाजी को खड़ा किया। उनके खड़ा होते ही कोमल जी ने फिर हाथ आगे बढ़ाया। लेकिन अब की बार मामा जी ने घबराकर दूर से ही हाथ जोड़ दिए। बेचारे मामाजी, उनको क्या पता था कि उनका स्वागत इस तरह से होगा। उनके दोस्तों का हंस-हंसकर बुरा हाल था, उन्हें अच्छी तरह याद था कि पहले भी कई बार ऐसा हो चुका था। एक बार जब कोमल जी को अपना वजन पता करने की सनक चढ़ गयी थी तो जा चढ़े मशीन पर।



(शेष पृष्ठ ३८ पर

परोपकारी



बात-बे-बात की



आपस की बातें
चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

मो० जहांगीर, रांची : चाचाजी, यदि मैं चांद पर हवाई अड्डा बना द नो क्या आप खुश होंगे ?

उ० : जी हां, कल एक आदमी ने हमारी चांद पर 'चांद मारी' की थी, तब भी हम बहुत खुश हुए थे। कल जब हम आफिस पहुंचे तो हमारे सर पर पट्टियां बंधी थीं और कपड़े लहुलुहान थे। एक मित्र ने पूछा, क्यों चाचा जी, क्या बात हुई ?' हमने उत्तर दिया, परसों एक आदमी दिल्ली गेट के पास हमारी कार के नीचे आ गया था। उन्होंने फिर पूछा, 'दिल्ली गेट के पास कार के नीचे वह आया था और सर तुम्हारा इंडिया गेट बना हुआ है।' हमने उत्तर दिया, 'आज अजमेरी गेट पर उससे मुलाकात हो गई थी।'

उमेश सकूजा—बेरमो : चाचाजी, क्या यह सच है कि आप मैट्रिक फेल हैं ?

उ० : अगर यह सच नहीं है तब भी इससे क्या अन्तर पड़ता है ? अनपढ़ होना तो हमारे देश की महानता है, यहां ऐसा आदमी भी लोक सभा का सदस्य और शिक्षा मंत्री बन सकता है जो अंगूठा छाप हो और अपना नाम लिखना भी न जानता हो।

भीम शर्मा—जमालपुर, मुंगेर : मनुष्य मरने की इच्छा कब करता है ?

उ० : जब उसे पता लगे कि मरने से उसकी शान बढ़ जाएगी। आप हमारे मरने की खुशी में ताजमहल बनवाने का वादा कीजिए, या मोरारजी देसाई से लोकसभा में शोक प्रस्ताव पास करवा दीजिए, फिर देखिए हम मरते हैं या जसलोक अस्पताल से चिपटे ही रहते हैं !

हंसराज सिंह 'अधूरा'—इलाहाबाद : जब लड़के लड़कियों को देखते हैं, तो लड़कियां सबसे पहले अपना आंचल क्यों देखती हैं ?

उ० : लगता है आपने अब तक अधूरी बात देखी है माई डीयर मिस्टर अधूरा। लड़कियां आंचल से परे अपने सेंडल देखती हैं। इस बात पर दो चार अधूरे शेर हाजिर हैं :

दिल देखा था, अब उनका जिगर देख रहे हैं,
सेहरा न बंध सका, फटा सर देख रहे हैं।
दिन रात उनके घर के लगाते थे जो चक्कर,
किस शान से वो अब बड़ा घर देख रहे हैं।
हम वो नहीं जो बात नजाकत की ना समझें,
हम जानते हैं अब वो किधर देख रहे हैं।
अब पांव की चीज आने ही वाली है हाथ में,
हम देखने वालों की नजर देख रहे हैं।

रामेश्वर दयाल—भोपाल : मुझे दीवाना का अंक नं २८ नहीं मिल रहा है। क्या आपके यहां से मिल सकता है ?

उ० : अंक नं० २८ तो समाप्त हो चुका है। कहिये तो अंक नं०२२ की दो प्रतियां भिजवा दें।

सुरेन्द्र भाई आजाद—राजविराज मार्केट (नेपाल) : मैं अपनी श्रीमती को लेने जाता हूं तो वह आती नहीं बताइये क्या करूं ?

उ० : यह प्रसिद्ध कर दीजिये कि आपके नाम दिल्ली लाटरी की सत्रह लाख रुपये की लाटरी निकली है। फिर आपकी श्रीमती क्या हमारी श्रीमती भी आपके पास पहुंच जायेंगी।



देव कुमार—शिलंग (मेघालय) : डीयर अंकल, क्या आप यह बात मानते हैं कि पत्नी का भगवान पति होता है ?

उ० : पहले तो नहीं मानते थे। पर जब हमारी श्रीमती जी ने हमारे बटवे से नोट निकाल कर उसमें भगवान की तस्वीर रखी, तब से मानने लगे हैं।

खेमराज चोबरा—नवलगढ़ : मैं दीवाना फ्रेंडज़ क्लब का सदस्य बनना चाहता हूं। बताइये क्या करूं ?

उ० : अपना नाम पता लिखकर अपनी पासपोर्ट साइज फोटो सम्पादक दीवाना के पते पर भेजिये और फिर फोटो अधिक और जगह कम होने के कारण फोटो छपने में देर लगे तो हमें बुरा भला कहिए

विवेक बच्चन, अमवारी—(बिहार) : यह जानते हुए भी कि शरीर एक दिन मिट्टी हो जायेगा, मनुष्य इससे इतना प्यार क्यों करता है ?

संजीव मेहता—लुधियाना : चाचाजी आप कहां जाना पसन्द करेंगे ? स्वर्ग में या नर्क में ?

उ० : इन दोनों का मजा तो हम इस धरती पर ही ले रहे हैं : कहीं और की बात कीजिए।

रवि भाटिया—शंकर रोड मार्किट : क्या आप केवल अपने जानने वालों के प्रश्नों के ही उत्तर देते हैं ?

उ० : अच्छे, मनोरंजक और नये-नये प्रश्नों के उत्तर देते हैं केवल इतनी जान पहचान ही जरूरी है।

केवल प्रकाश बुआ—काशीपुर : अंकल, मैंने १०१ रुपये की तांत्रिक अंगूठी मंगवाई थी, पर मैं जो चाहता हूं उसका उल्टा ही असर हो रहा है।

उ० : अंगूठी भेजने वाले ने जो चाहा, उसका असर तो सीधा हुआ। उसने चाहा था, हे भगवान कोई ऐसा बेवकूफ टकरा दे जो पांच पैसे की अंगूठी १०१ रुपये में खरीद ले। और वह टकरा गया।

अरविन्द कुमार जैन—जबलपुर : अंक १५ में अपने प्रश्न का उत्तर देख कर मैं इतनी जोर से उछला कि सर छप्पर से टकरा कर फूट गया है। क्या आप डा० झटका से इलाज करवा देंगे ?

उ० : हमने डाक्टर झटका से बात की थी। वह कहते हैं, इलाज कर देंगे। आप छप्पर यहां भिजवा दीजिए।

सुदामा मल दुर्गा—रायपुर : दीवाना का पहला अंक कब प्रकाशित हुआ था ?

उ० : १५ वर्ष पहले।

मोतीराम टहलवाणी—परतवाड़ा : अमृत पीने से आदमी अमर हो जाता है, जहर पीने से आदमी मर जाता है और अंगर दोनों साथ-साथ पी ले तो ?

उ० : जनता पार्टी बन जाता है, जो न जी सकती है, और न मर पाती है।

प्रहलाद जसवानी—कृष्ण कन्हैया : चाचा जी, मनुष्य को जीवन में क्या बनने का प्रयत्न करना चाहिये ?

उ० : यही, कि वह किसी प्रकार मनुष्य बन सके।

पवन कुमार कटारिया—नई दिल्ली : चाचा जी, खाना पीना हराम हो जाये तो क्या करना चाहिये ?

उ० : जिस हरामखोर के कारण ऐसा हुआ है, भगवान से उसकी चुगलखोरी करनी चाहिये ?

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२


भाइयों, ग्रापको सुपरमैन सिलबिल की सेवाग्रों की जरूरत पड़े तो शरमाना मत, दीवाना के पाठकों को हम विशेष रियायत देंगे। जिसको कोई सुपर काम करवाना है वह हमारे घर से यह फार्म ले जाये। ट्रिपलिकेट में भरकर हमें भेज दे। फार्म फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट से ऐटेस्ट किया होना चाहिए ग्रौर साथ में ग्राठ रुपये का पोस्टल ग्रार्डर, ग्रपने सारे सर्टिफिकेट डाक्टर का मैडिकल सर्टिफिकेट भी भेजना ग्रौर इकममटैक्स वालों का क्लीयरेंस चिट होना भी जरूरी है। साथ में यह भी लिखना कि सुबह नाश्ते में क्या खाया था। फार्म भरने वाली सुबह कोई बुरा सपना तो नहीं ग्राया था ?
यह बच्चा रो रहा है। मैं इसकी मदद करूंगा। हर सुपर मैन बच्चों की जरूर सहायता करता है इससे पूछ कर देखता हूँ कि क्या बात है ?
ऊऽऽऽ
मम्मी से पंद्रह पैसे लेकर मैने एक टॉफी खरीदी थी। उसको लेकर ग्रा रहा था। सुबक···सुबक···हाथ से टॉफी छूट गयी ग्रौर गंदे पानी के नाले में जा गिरीऽऽऽऽ मेरी टॉफी···
बस इतनी सी बात ? मैं ग्रभी टॉफी निकाल कर देता हू तुम्हें बेटे। सुपर गोता मार कर निकालूंगा।
यह लो बेटे, मिल गई तुम्हारी टॉफी।
शाबाश ! रोग्रो मत ग्रब।
ग्ररे, ग्ररे, नासपीटे यह क्या कर रहा है ? गन्दी नाली में गिरी कीचड़ ग्रौर गंद में लिथड़ी टॉफी मेरे बच्चे को देकर इसे बीमार करना चाहता है ? ठहर तेरी खबर लेती हूं।
तू ही है वह उठाईगीरा जो बच्चों को किडनैप करके ले जाता है।
टांय


याड़ी अपना दिल छोटा मत कर। हिम्मत का दामन मत छोड़। उस औरत ने चांटा दिया तो क्या हुआ ? कौन सा पहले ही तुझे पद्मश्री का खिताब मिला था जो खराब हो गई, ऐसी छोटी-मोटी दुर्घटनायें सुपरमैन की सुपर जिंदगी में होती ही रहती तुझे तो फख्र होना चाहिए कि दुनिया में किसी औरत के हाथ से चांटा खाने वाला पहला सुपरमैन है। हमारे देश के पास यह रिकार्ड तो है। हॉकी के बाद विश्व कायम करने वाला तू अकेला भारतीय है। सारे हिन्दुस्तान को तुझ पर नाज है। खड़ा हो, सारा देश तुझ से सुपर आशायें लगाये बठा है। तुझे अभी बहुत से महान् करने हैं।
ऐ क्या ? सिलबिल तो वाकई सुपरमैन की तरह हवा में राकेट की तरह उड़न-छू हो गया। शायद मैंने इसमें हवा ज्यादा भर दी। गुब्बारे में हवा ज्यादा भर दो तो वह उड़ जाता है। हमारे देश में चमचा गीरो हाई स्पीड डीजल इंजन का काम करता है। जहां तेल से गाड़ी नही चलती वहां भी मक्खन लगाने से गाड़ी चल पड़ती है
आह ! मैं अपनी सुपर दृष्टि से यह क्या देख रहा हूं ! धरती पर एक बुढ़िया और दुखिया रो रही है। देखूं क्या है ?
ऐ बुढिया माई, रोना बन्द कर और मुझे बता तुझे क्या तकलीफ है। मैं सारे दुख दूर दूंगा। मैं सुपरमैन सिलबिल हूं। दुनिया में कोई काम ऐसा नहीं है जो मैं अपनी शक्ति से नहीं कर सकता। अगर तुझे शक है तो राजनारायण से पूछ ले। वन···टू···थ्रो·· अपना दुखड़ा सुनाओ।
मेरी मदद करोगे तुम ?



पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

खेल खेल में

जितेन्द्र कुमार—फिरोजपुर छावनी

प्र० : कई पत्र डाले, परन्तु मुझे ऐसा लगता है कि आप मेरे पत्रों पर ध्यान दिए बिना उन्हें रद्दी की टोकरी में डाल देते हैं। खैर कुछ भी हो मैं ढ़ीट बनकर पत्र लिख रहा हूँ। पिछले कई पत्रों में मैंने खेलों से संबंधित प्रश्न पूछे थे जिनका उत्तर मुझे नहीं मिला। आशा है आप इस बार जरूर उनका उत्तर देंगे।

उ० : खेल खेल में प्रश्नोत्तरी कॉलम पाठकों के खेलों के विषय में ज्ञानवर्द्धन के लिए है। पाठकों का भी इसमें सहयोग चाहिए वे भी एक दूसरे को जो वह जानते हैं बता सकते हैं। अगर वह बताने लायक हुआ तो! आपके प्रश्नों को पढ़कर ऐसा लगा कि आपने किसी और पत्रिका में पढ़ने के बाद हमें प्रश्न बनाकर भेजे हैं। इनके उत्तर आपको मालूम हैं। यह कॉलम उन पाठकों के लिए है जो सचमुच खेलों के बारे में कुछ जानना चाहते हैं जिनका उनको ज्ञान नहीं है। आप चाहें तो आपको जो पता है उसे दूसरों पाठकों तक पहुंचा सकते हैं। अर्थात् आप प्रश्नों के साथ उत्तर भी लिख भेजिए क्योंकि आपको उत्तर का पता है। और जब दूसरे पाठकों को हमें उसी विषय में प्रश्न भेजेंगे तो हम आपके प्रश्न उत्तर छाप देंगे। जो प्रश्नकर्त्ता पाठक सचमुच ही कुछ जानना चाहते हैं उनके उत्तर हम जरूर देते हैं।

अनिल कुमार गारखेल—१८ बी शाहवाना कालोनी बरेली

प्र० : भारतीय विकट कीपर भरत रेड्डी क्या खुदा का भतीजा है। जो इसको टीम से निकाला ही नहीं जाता।

उ० : आप रेड्डी की जगह किसको भेजना चाहते हो? आपको भरत रेड्डी के बारे में पता नहीं है। युवा विकेट कीपरों में रेड्डी सर्वश्रेष्ठ है अतः दौरों पर जाने पर उसे खेल देख अनुभव तो होगा ही जो बाद में भारतीय क्रिकेट को ही लाभ पहुंचाएगा। भरत रेड्डी बहुत हंसमुख तथा मृदु स्वाभाव का लड़का है जो सारी टीम को प्रसन्न रखता है। वह एक बहुत अच्छा संगठनकर्त्ता यानि आर्गेनाइजर भी है जो दौरे के समय खेलों के अतिरिक्त सारे रहने-सहने व कार्यक्रमों का बहुत सुचारु रूप से संचालन करता है। दौरों पर मैनेजर व टीम के खिलाड़ी भरत रेड्डी पर बहुत निर्भर करते हैं।

प्र० : इग्लैंड पहुंचते ही क्या भारतीय टीम के खिलाड़ियों को सांप सूंघ जाता है।

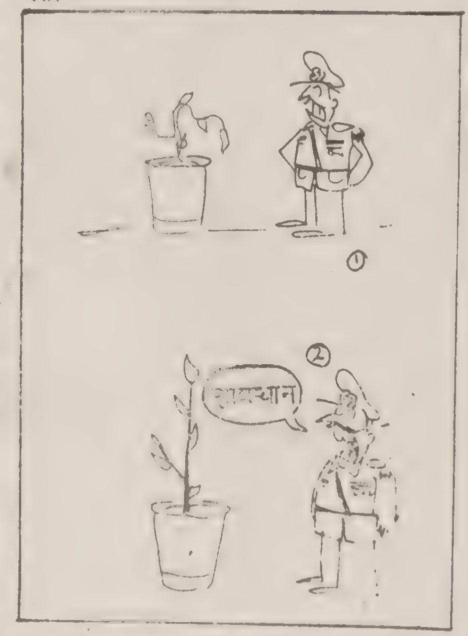
उ० : इग्लैंड ही क्रिकेट खिलाड़ियों का कुरुक्षेत्र है। यहां से जो सफल होकर निकला वह कहीं मार मार नहीं खाता। और कई बड़े-बडे फन्ने खाँ यहाँ आकर मिट्टी में मिल गये। इग्लैंड का जलवायु ऐसा है कि पल-पल रंग बदलता है जो पिच पर बहुत प्रभाव डालता है। मौसम भारी होते ही गेंद अनिश्चित रूप से स्विंग होने लगती है। जो खिलाडी हर स्थिति के अनुसार अपने को ढाल पाने योग्य होते हैं वहीं इग्लैंड से अपनी इज्जत संभाल कर निकल आते हैं। यूं समझिए कि इग्लैंड में खेलना क्रिकेट प्रतिभा की फाइनल परीक्षा होती है।

प्र० : गायकवाड़ चींटी की चाल से क्यों रन बनाता है।

उ० : क्योंकि उसे जल्दी नहीं है। गायकवाड़ को पता है कि यहाँ सब कुछ चलता है। अंधों में काने राजा बनने के अवसर मिलते ही रहते हैं।

प्र० : चिल्ली साहब का टेस्ट रिकार्ड बताइए।

उ० : चिल्ली का नारा है 'रैस्ट इज बैस्ट फॉर दि टैस्ट'। अब चिल्ली टैस्ट की तैयारी में रैस्ट ही करता रहा है। इतना रैस्ट कि टैस्ट को पास भी फटकने नहीं देता।



के० पी० गुप्ता—काशीपुर (उ. प्र.)

प्र० : रूस, जापान, अमेरिका वगैरा ७०-८० तक स्वर्णपदक ले जाते हैं। भारत को कभी तो एक भी स्वर्ण पदक (ओलम्पिक) में नहीं मिला?

उ० : भारत एक गरीब देश है और ये अमीर। अमीर देशों के पास पैसा है और साधन हैं व जलवायु अनुकूल है। हमारे देश में लोग मुश्किल से दो समय का खाना जुटा पाते हैं। इन देशों के लोग नाश्ते में इतना खा जाते हैं जितना हम दिन भर में नहीं खाते। भारतीय दिन रात लकड़ी के चक्कर में फँसा है उस खेलों के लिए समय कहाँ है। अमी के लोगों को काम कम और पैसा मिलता है। समय फालतू बहुत है खेलों में बहुत रुचि लेते हैं व पैसा ख सकते हैं। भारत की आबादी ६ रह जाए तो फिर हम उनका मुकाबल की सोच सकते हैं।

सन्तोष कुमार—नेहरू वार्ड, गोरे गांव

प्र० : निम्न गेंद बाजों को उनक के क्रम में दीजिए-सलीम दुर्रानी, घावरी, कपिल देव, वरुण धर्मन, ए सोलकर।

उ०: भारत में गति मापने की मशी आई है, अतः कुछ कहा नहीं जा स लेकिन इतना हम बता सकते हैं कि गति मापी गयी तो विश्व के मुकाबले गति इतनी धीमी होगी कि आप कहेंगे होना अगर इनकी गति मापी ही न ह

बरणनाथ—बरवाडीह (पलामू)

प्र० : मैं एक अथलेटिक हूं। मीटर तथा २०० मीटर क्रमशः ११.८ २४.८ सेकेण्ड में पूरा कर लेता हूँ। फि मेरी उम्र १८ वर्ष ४ महीना हो रही ज़बकि मेरी ऊँचाई ५ फुट २ इंच है आप बताएँ, 'क्या मैं इस ऊँचाई से कर सकता हूं या नहीं।'

उ० : आप अपनी लग्न से बहुत कर सकते हैं। कद को लेकर बेकार न करें।

अजय मिगलानी—चण्डीगढ़

प्र० : कृपया यह बताएँ क्रिके खेल में बल्लेबाज कितनी प्रकार से होता है?

उ० : नौ प्रकार से।

विजय नाधोनी—रायपुर (म. प्र.)

प्र० : प्रसिद्ध मुक्केबाज मोहम्मद कौन से देश के निवासी हैं?

उ० : अमरीका (पहले वह क्रि थे कैसियस क्ले के नाम से मशहूर! में अमरीका में कालों के साथ हो अन्याय के विरोध में उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर मोहम्मद अली नाम अपन

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास


कौन आया मेरे मन के द्वारे पायल की झंकार लिए।
टिंग टिंग
बन्द करो बकवास, और जल्दी से तीन महीने के दूध के पैसे निकालो, वर्ना तुम्हारे मन के द्वारे हम धरना देकर बैठने वाले हैं।
ढुम ढुम
टिंग टिंग
मधुबन में राधिका नाचे रे...
बन्द करो बकवास, राधिका को बन में लाये हो तो उसके कपड़ों में घुसे कीड़े-मकौड़ों को निकालने में उसकी मदद करो।
हम दोनों दो प्रेमी दुनिया छोड़ चले...
बन्द करो बकवास पहले ऊपर चढ़ने की टिकट ले के आओ, फिर जहां जाना हो जाओ।

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

ऊंची पैर की ठोकर (हाई किक)

यह किक पैर के अगले वाले हिस्से (उंगलियों के नीचे की गद्दी) से मारी जाती है। हाई किक का इस्तेमाल ठोड़ी या मुंह पर प्रहार करने के लिए किया जाता है। हाई किक मारते समय आपका शरीर थोड़ा आगे की ओर झुका होना चाहिए तथा जमीन वाला पैर ऐड़ी और तलवे की तरफ से बिल्कुल जमीन पर लगा होना चाहिए।

सामने की पैर की ठोकर (फ्रन्ट किक)

सामने की किक मारते समय पैर के घुटने को थोड़ा मुड़ा हुआ रखिए और पैर के पंजे से शत्रु के पेट या जांघों के बीच के भाग में प्रहार कीजिए। (यदि आप शत्रु के काफी पास हैं तो घुटने की चोट कर सकते हैं।) किक मारते समय पैर को ढीले छोड़ दीजिए। ढीले पैर का प्रहार जोरदार पड़ता है।

घुटने की ठोकर (नी किक)

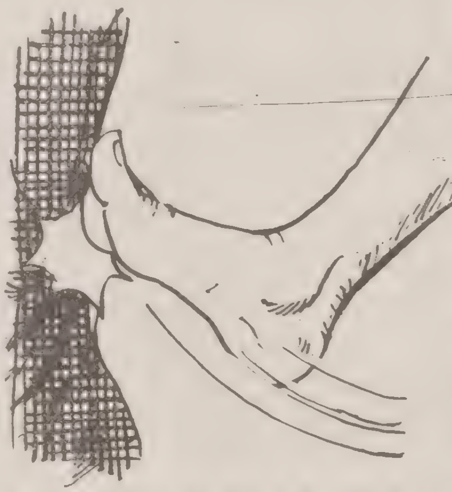
घुटने की मार का प्रयोग मुख्य रूप से तीन जगह ही किया जाता है। जाघों के बीच में, पेट पर या दुश्मन का सिर पकड़ कर नीचे करके उसके मुंह पर घुटना मारना।

घुटने मारते समय पैर को घुटने से मोड़कर पीछे की ओर ले जायें फिर तेजी से आगे की ओर ले जाते हुए विरोधी के पेट या जाघों के बीच प्रहार के साथ ही फुर्ती से पैर नीचे ले आइए।



बगल की ठोकर (साइड किक)

बगल से किक मारते समय आपके करवट की तरफ बायें या दायें कूल्हे को शत्रु के सामने रखते हुए पैर के धार वाले हिस्से (पैर की छोटी उंगली के बगल वाला



धारवाला हिस्सा) से शत्रु की गर्दन या मुंह पर प्रहार करते। बगली किक अन्य किकों की अपेक्षा कुछ सुविधाजनक है। बगली किक का इस्तेमाल छाती पर प्रहार करने के लिए भी किया जाता है। बगली किक मारते समय शरीर को किक मारने की दिशा में झुका हुआ रखना चाहिए ताकि शरीर का संतुलन बना रहे।

घुमावदार पैर की ठोकर (राउन्ड किक)

घुमावदार किक में पैर को सामने से न मारते हुए पहले बगल की ओर उठाते हैं और घुमाते हुए सामने खड़े शत्रु की कनपटी या जबड़े पर पैर के रखने का प्रहार करते हैं। यदि आप बांया पैर घुमाकर मारते हैं तो शरीर का झुकाव दायीं ओर के पैर की ओर रखिए।

जिस प्रकार पर को घुमाते हुए चोंट करते हैं उसी प्रकार आप घुटने की चोट भी अर्धवृत्ताकार रूप में घुमाते हुए कर सकते हैं।

टखने की ठोकर मारना (एंकल किक)

टखने की मार का प्रयोग हम दुश्मन की पिंडली पर, टांग की सामने वाली हड्डी पर, घुटने की टोपी पर कर सकते हैं।

यदि परिस्थितिवश हम दुश्मन के पीछे हो जायें तो ऐसे में टखने का प्रहार कर देना चाहिए। इससे दुश्मन का घुटना बुरी तरह जमीन से टकरा जायेगा और वह खड़ा नहीं रह सकेगा। यह ध्यान रखें कि जिस पैर से किक मारें उस पैर का अंगूठा ऊपर की ओर मुड़ा हुआ रखें अन्य[…] लगने का डर रहता है।

पीछे से ठोकर मारना (बैक किक)

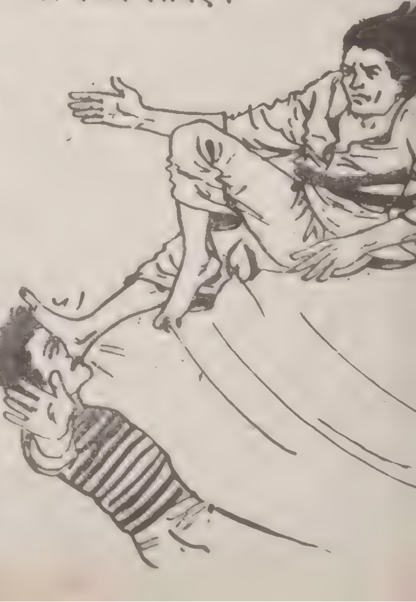
इस प्रकार की किक आप पै[…] पीछे की ओर उछाल कर मार स[…] जब कि विरोधी आप पर चुपके से पी[…] हमला कर रहा हो। पैर को पहले उ[…] आगे की ओर ले जायें और झुकाते[…] पीछे ले जाकर पैर को ऐड़ी का […] विरोधी के पेट पर कसकर दें। […] बनाए रखने के लिए अपने शरी[…] आगे की ओर झुका लीजिऐ।

ऊंची उछाल ठोकर (फ्लाइंग किक)

उँची उछाल मारकर किक […] तभी सीखा जा सकता है जब आप […] के सही ढंगों से अच्छी तरह वाकि[…] जायें। क्योंकि ऊँची छलांग मारकर […] मारते ही आपका शरीर पीछे की […] प्रतिबल द्वारा फेंका जाता है। ऐसे […] संतुलन बिगड़ जाना स्वाभाविक ही है[…]

ऊँची उछाल द्वारा पैर की […] मारने के लिए विरोधी आपसे दूर […] चाहिए। क्योंकि उछाल मारने के […] थोड़ा तेज गति से दौड़ना जरूरी हो […] है।

तेज दौडकर आइए और पंज[…] नीचे दबाने के बाद उछाल भरिए। उ[…] ही आपका एक पैर आगे की ओर […] आना चाहिए। दूसरा पैर घुटने से […] हुआ होना चाहिए। किक मारते ही व[…] तुरन्त नीचे की ओर झुका लें। जब व[…] जमीन पर लगे तो पहले पंजा जमीन[…] स्पर्श करे, यह ध्यान रखिए। इससे […] पैर में स्प्रिंग जैसा लचीलापन आ ज[…] और झटका नहीं लगेगा। आपका […] किक के प्रतिबल द्वारा जिस दिशा में […] की ओर गिरने वाला हो, जमीन प[…] लगते ही उसी दिशा से गुलांट या कला[…] खाते हुए लुढ़क जाइए और तुरन्त […] का प्रयत्न कीजिए।



बूझिये

५ रुपये जीतिये

बच्चे और कार

सड़क पर पुरानी कार जा रही थी। कार में खुशी से चीखते चिल्लाते बच्चों की टोली सवार थी। पीछे से एक नयी कार आ रही थी। नयी कार ने पुरानी कार को देखते ही देखते ओवरटेक कर लिया। बच्चे एकाएक चुप हो गये।

कुछ दूर जाने पर नयी कार रुक गयी, कार में मियाँ-बीबी बैठे थे। मियाँ बाहर निकले और कार का बोनेट उठाकर इंजन ठीक करने लगे। इतने में ही बच्चों से लदी वह पुरानी कार वहाँ से गुजरी। बच्चे खुशी से चीख-चीखकर ताली बजाते हुए खड़ी कार की तरफ इशारा करने लगे!

उनके आँखों से ओझल होते ही मियाँ ने इंजन का ढक्कन बन्द किया और कार में बैठते हुए बोले, 'वास्तव में कार में कोई खराबी नहीं आई थी! मैं तो उन बच्चों को उनकी वह खुशी लौटाना चाहता था जो हमने कुछ देर पहली छीन ली थी।'

सारांश :—

अन्तिम तिथि— ४-८-१९७९

: दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

तुक्कम तुक्का

मुकाबला

पुरस्कार ५ रु०

हम इस प्रतियोगिता में हर सप्ताह एक नेता को लेंगे। आपको उस नेता के नाम के अक्षरों से क्रमवार एक व्यंग्य कविता लिखनी होगी जो उसके कारनामों पर फिट बैठे। उदाहरण के तौर पर हमने राजनारायन जी पर कविता लिखी है। उसी प्रकार आप नीचे लिखे नाम पर कविता लिख भेजिए। नाम के सारे अक्षरों से क्रमवार कविता की लाइनें बनानी चाहिये।

सर्वश्रेष्ठ कविता को पुरस्कार

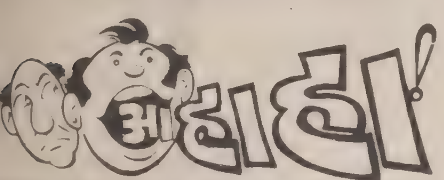
रायबरेली के बैसाखी नंद हैं ये,
जनता पार्टी की दाल भात में मूसरचंद हैं ये।
नाना बयान रोज अखबारों को देते हैं,
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की खबर लेते हैं।
यह साहब जिसके पक्ष में खड़े होते हैं,
नादानी से उसी की लुटिया डुबोते हैं।

| ज ग जी व न रा म |

दीवाना के कार्यालय में हल पहुंचने की अन्तिम तिथि ४-८-१९७९

उत्तर केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

तुक्कम तुक्का
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



● एक जगह संगीत का प्रोग्राम था! एक लड़की का भी एक फिल्मी गाने का आइटम था! दुर्भाग्यवश उसी दिन लड़की के गले में खराश हो गयी और कुछ गला बैठ गया। अपनी बारी आने पर माइक पर उसने गले के बारे में बताया और गाने लगी, 'पंछी बनू गाती फिरूं मस्त गगन में...' गाने में क्योंकि आवाज ऊंची उठानी पड़ती है इस लिए जैसे ही वह आवाज उठाने की कोशिश करती आवाज फट जाती। दो तीन बार कोशिश करने के बाद वह चौथी बार ट्राई करने लगी। एक दो दर्शक चीखा, आपका गला पंछी बनने लायक नहीं है। मुर्गी बन-कर देखिये! ऊंचे नहीं उड़ना पड़ेगा।'

●

अध्यापक—पृथ्वी गोल है या चौकोर या चपटी?

एक छात्र—सर, बराबर गोल है।

अध्यापक—शाबाश, अब एक प्रमाण दो।

छात्र—सर, आपने ग्लोब नहीं देखा है क्या? वो बिल्कुल गोल है, इससे यह साबित होता है कि पृथ्वी गोल है।

● मंसूर अली खाँ पटौदी ने अपनी एक आंख खोने के बाद मद्रास टैस्ट में सेंचुरी बनाई। इंगलिश कैप्टन ने पूछा, 'कमाल है! एक आंख खोने के बाद तुम्हें कब लगा कि तुम दोबारा टैस्टों में इतने सारे रन बना पाओगे?' पटौदी ने जवाब दिया, "इंगलैंड के बॉलरों को देखने के बाद।"

रोंग-रूट

शहर की चुंगी से कुछ दूरी पर माल से लदे एक ट्रक को सिपाही ने रोक लिया। बोला—'रोंग-रुट चलते हो! लाओ, लायसेंस निकालो।' ड्राइवर ने नम्रता के साथ कागज दे दिए। उनमें कोई कमी नहीं थी। लेकिन सिपाही संतुष्ट नहीं हुआ। चिल्लाया, 'इसमें चालू साल कहाँ है?' बताने पर भी सिपाही ने सर हिलाते हुए कहा—'मैं कुछ नहीं जानता। तुम्हें रात भर रुकना होगा। सुबह साब से बात होगी।' ड्राइवर भी पुराना था। समझ गया। मुस्कराते हुए उसने जेब से कुछ नोट निकाले और सिपाही की ओर बढ़ाते हुए बोला—'माफ करना दीवाना जी ये कुछ और कागज रह गये हैं!' सिपाही एकदम ढीला हो गया। बोला—ठीक है, ठीक है। जाओ। बिलावजह इतनी देर की।'

सफल नेता

गोपाल चौरसिया

एक युवक ने अपनी प्रेमिका को धोखा देकर शादी कर ली। एक दिन बाजार में मिलने पर प्रेमिका ने धोखे का कारण पूछा? प्रेमी बोला—

'क्या करूं मुझे जब जय बोलने वालों की जरूरत थी तब तू 'जान' देने की बात करती थी। और अब मुझे 'जान' देने वाले की जरूरत है। क्योंकि पत्नी से बहुत तंग आ गया हूं।'

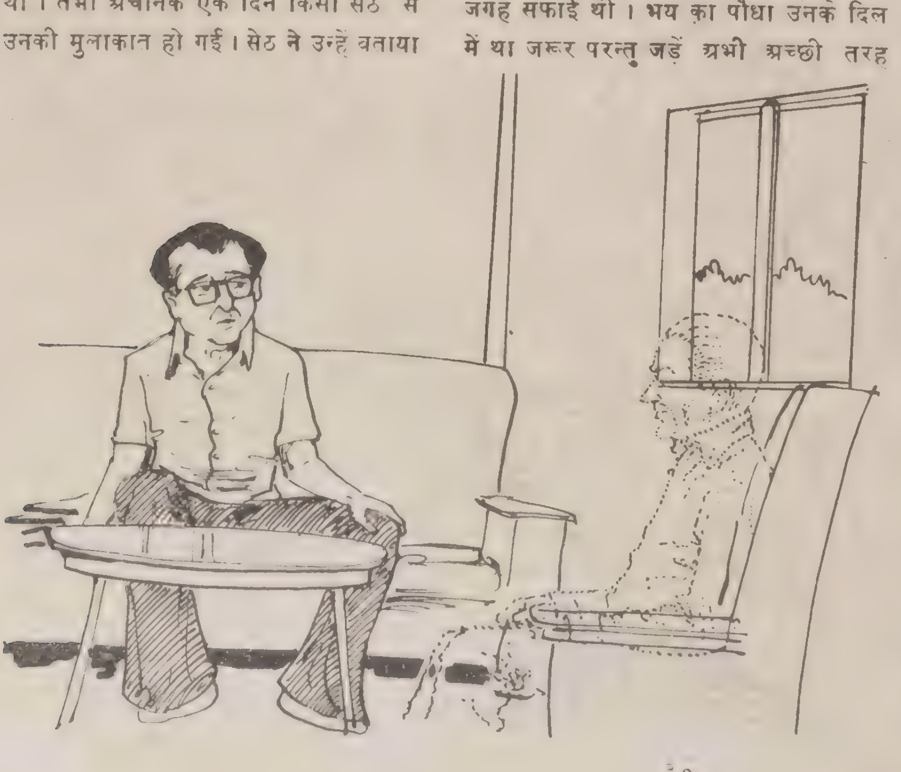
इस पर लड़की ने कहा—'तो अब मैं सिर्फ तुम्हारी 'जय' का ही समर्थन करूंगी।' सुनकर, प्रेमी बोला—'मुझे नहीं मालूम था तू इतनी सफल नेता है।'

हमदर्द प्रेत

विश्वरमन "निर्मल"

प्रेत, यह नाम तो जैसे जबान पर आते ही डर लगने लगता है, और यदि सामना हो जाये तो ज्यादातर लोग होश गंवा बैठते हैं। परन्तु सभी मनुष्य एक जैसे नहीं होते, यह बात तो सर्व विदित है ! प्रेत ! जरूरी नहीं है कि यह शब्द सिर्फ डराने के लिये ही बनाया गया हो। बहुत सी आत्माएँ ऐसी होती हैं, जो किसी का कुछ नहां बिगाड़तीं बल्कि समय पड़ने पर मदद भी करती हैं। वैसे ज्यादातर प्रेत आत्माएँ ऐसी ही होती हैं कि वह किसी तरह अपना प्रतिशोध पूरा कर सकें। परन्तु यह तभी होता है जब कोई उन्हें तंग करता है।

यह बात कोई ज्यादा पुरानी नहीं है। करीब पन्द्रह वर्ष हुए दो व्यापारी गांव में भली प्रकार से अपना कारोबार चला रहे थे। परन्तु अचानक उनके कारोबार में बहुत बड़ा घाटा हुआ, जिसकी वजह से वे दोनों ही काफी कर्जदार हो गए थे। एक व्यापारी के साथ भगवान ने शायद बहुत बड़ा अन्याय किया हो। क्योंकि कुछ दिन पूर्व ही उसकी लड़की की शादी तय हो गई थी और लड़के वाले बहुत जल्दी कर रहे थे ! उस व्यापारी के समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ? तभी दूसरे व्यापारी ने सलाह दी कि क्यों न शहर चलकर थोड़ा पैसा कमाया जाए ! काफी दिनों से दोनों सभी काम साथ-साथ कर रहे थे। इसलिए दोनों ही व्यापार करने के लिये शहर आ गये। यह शहर उनके लिये बिल्कुल नया था, इसलिये हर काम में बड़ी रुकावट आ रही थी। सबसे पहले उनकी रहने की समस्या ही उनके सामने थी। बहुत दिनों से उन्हें कोई सस्ता व अच्छा मकान रहने के लिए नहीं मिल रहा था। तभी अचानक एक दिन किसी सेठ से उनकी मुलाकात हो गई। सेठ ने उन्हें बताया मकान तो उसके पास है, परन्तु जो व्यक्ति भी उस मकान में रहने के लिए जाता है। वह रात को भाग जाता है। आज तक किसी ने भी एक रात उस मकान में नहीं गुजारी। लोग कहते हैं कि उसमें कोई प्रेत आत्मा रहती है। यह जरूरी नहीं है कि अब भी वह मौजूद हो। यदि चाहो तो वह मकान मैं तुम्हें रहने के लिये दे सकता हूं और कोई किराया भी नहीं लूंगा। बस मैं तो यही चाहता हूं कि उस मकान की सफाई होती रहे। सेठ की बात सुनकर पहले तो दोनों घबराये। परन्तु फिर दिल को मजबूत किया और सेठ से कहा, "सेठ जी हम आपके मकान में रहने के लिये तैयार हैं।" इसके अलावा उनके पास कोई चारा भी न था, और फिर बिना किराया दिये रहने के लिए मकान उन्हें कौन देता। दोनों यही सोच रहे थे कि जरूरी नहीं है उसमें कोई प्रेत हो, यह लोगों का भ्रम भी हो सकता है। सेठ ने उन्हें मकान की चाबी दे दी और साथ ही हिदायत दी कि यदि कोई गड़बड़ हो तो वह उसके पास चले आयें। चाबी लेकर दोनों मकान की तरफ चले गए। जब उन्होंने मकान का दरवाजा खोला तो सामने ही काफी सुन्दर बगीचा था और उसके पास ही में दो कमरे तथा रसोई घर बना हुआ था। यों तो मकान इतना पुराना नहीं था, परन्तु फिर भी हर जगह सफाई थी। भय का पौधा उनके दिल में था जरूर परन्तु जड़ें अभी अच्छी तरह नहीं जमी थीं। जाकर उन्होंने कमरों की अच्छी तरह सफाई की और आराम करने के लिए लेट गए।



शाम का समय था, दोनों बैठे हुए चाय पी रहे थे कि एक आदमी ने अन्दर प्रवेश किया। दोनों ने सोचा शायद सेठजी का नौकर होगा। उन्होंने उसे बैठने के लिए कहा और पूछा, 'चाय पिओगे क्या ?' उसने ना में सिर हिला दिया। चाय पीने के बाद उन्होंने पूछा, 'कहो कैसे आये हो ?' 'बहुत दिनों के बाद इस मकान को खुला देखकर चला आया, सोचा देखकर आता हूं कि कौन इस मकान में आया है ? उसने बड़े सरलतापूर्वक उत्तर दिया। फिर दोनों व्यापारियों ने बताया कि वे दोनों यहाँ किस लिए आए हैं, और गांव से उन्हें यहाँ क्यों आना पड़ा। एक ने तो अपनी लड़की की शादी के बारे में भी बताया और कहा कि उसे बड़ी परेशानी है कि वह कैसे अपनी लड़की की शादी करेगा। काफी देर तक बातें होती रहीं। फिर एक व्यापारी ने उस आदमी से कहा, 'क्यों भईया तुमने अपने बारे में कुछ नहीं बताया कि तुम कौन हो ? इस पर उस आदमी ने कहा, 'छोड़िये भी, मेरे बारे में आप जानकर क्या करेंगे।' इस पर दूसरे व्यापारी ने जोर देकर कहा, 'वैसे आप बताइये तो सही कहाँ रहते हैं ? अब तो आप हमारे दोस्त बन गये हैं। ज्यादा जोर देने पर उस आदमी ने कहा, 'मैं एक प्रेत हूं।' यह बात सुनकर दोनों व्यापारी बुरी तरह से चीख पड़े। लेकिन उनके सामने इस वक्त वह आदमी नहीं था। तभी फिर से उस आदमी की आवाज सुनाई पड़ी, 'देखो मुझसे इतना डरो मत, मैं इसलिए ही तुम्हारे सामने आया था कि कहीं सिर्फ मेरी आवाज सुनकर तुम डर कर भाग न जाओ। पहले भी जितने व्यक्ति इसमें आये सभी मेरी पूरी बात सुने बिना ही भाग गये। वैसे मैं इतना निर्दयी नहीं हूं कि तुम्हें अकारण ही तंग करूंगा। तुम मुझे अपना दोस्त समझो।' इसके बाद आवाज बन्द हो गई। काफी देर तक दोनों ही जिधर से आवाज आ रही थी देखते रहे। लेकिन फिर जैसे अचानक ख्याल आया तो उनका सारा शरीर पसीने से भीगा हुआ था। उन्होंने दिल पर किसी प्रकार काबू किया। एक व्यापारी जो कि कुछ होश में आ चुका था



परिणाम

क नं० २३ में प्रकाशित प्रतियोगिताओं के
रणाम

दीवाना वर्ग पहेली—
:—

स	म	मे	ल	न
र	■	न	■	ग
पं	त	न	ग	र
घ	री	■	ली	पा
■	■	सू	चा	ल

विजेता : महेन्द्र पाल त्यागी
२९८, ब्रह्मपुरी मुजफ्फर नगर
यू. पी. पिन : २५१००१

● तुक्कम तुक्का
श्रीमती नलिनी कोठिया

जेता : द्वारा पं० बंशीधर शास्त्री
बीना (म. प्र.) ४७०११३

चिए का हल

रांश : कोई भी व्यक्ति अपनी स्थिति से
तया संतुष्ट नहीं होता ।
जेता : मनीष कुमार सूद,
६/१७८-ए गान्धी नगर
नपुर पिन २०८०१२

कार्टून प्रतियोगिता :

विजेता : हरीश बहल
WZ-३५ मीनाक्षी गार्डन
नई दिल्ली-१८



शीर्षक प्रतियोगिता

5 रुपये

पुरस्कार जीतिये

चित्र में आप देख रहे हैं कि पिरामिडों के पास ऊंटों पर दो अरबी बैठे हैं। बायें कोने में दूसरे ग्रह से आये एक मानव का चित्र है। आप एक लाइन में हमें यह लिख भेजिये कि वह अरबी लोगों से क्या पूछ रहा है ? सर्वश्रेष्ठ मनोरंजक वाक्य को पुरस्कार।

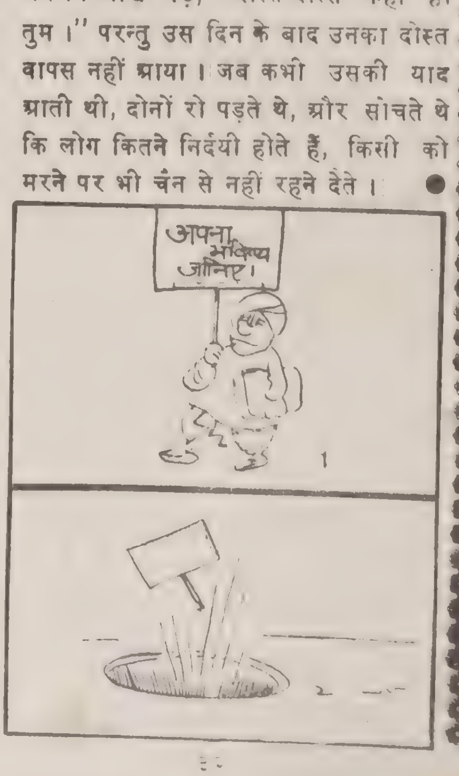
अन्तिम तिथि— ४ अगस्त १९७९



उसने पूछा था, दोस्त इतना तो तुम बता ही दोगे कि तुम यहां कब से हो ? आवाज एक बार फिर आई, इससे तुम्हें मतलब नहीं होना चाहिए कि मैं यहां कब से हूं परन्तु इतना जरूर समझ लो कि मैं तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं दूंगा । यदि तुम तांत्रिक हो तो मैं तुम्हें यह चेतावनी देता हूं कि मेरे ऊपर किसी भी प्रकार की तंत्र विद्या इस्तेमाल नहीं करना, वरना पछताना पड़ेगा । अब तक दूसरा व्यापारी भी संयम हो चुका था, उसने कहा, 'नहीं दोस्त, हममें से कोई भी तांत्रिक विद्या नहीं जानता है, मगर तुमने दोस्त कहा है तो दोस्त बनकर दिखाना । इस पर आवाज में हंसी सुनाई दी और फिर कहा, यह काम मेरे सोचने का है तुम्हारा नहीं, अभी तक तुमने मनुष्य से दोस्ती की है लेकिन अब तुम्हारी एक प्रेत से दोस्ती हुई है और प्रेत कभी धोखेबाजी नहीं करते ।' इसके बाद आवाज नहीं आई । दोनो व्यापारियों का डर लगभग जा चुका था। जब शाम को उन्होंने खाना बनाया तो दो की जगह तीन थालियों में खाना डाला । एक थाली दूसरे कमरे में ले जाकर रख दी गई और आवाज लगाकर कहा, "लो दोस्त यह खाना खालो।" तभी कमरे में से आवाज आई, "धन्यवाद दोस्त !" कुछ देर बाद थाली लेने गये तो थाली खाली हो चुकी थी । अब तो प्रतिदिन दोनों व्यापारी ऐसा ही करते थे । एक कमरा उन्होंने खाली छोड़ा हुआ था, तथा जो कुछ वह बनाते थे, वही अपने प्रेत दोस्त को खिलाते थे ।

काफी दिन इसी प्रकार गुजर गए । व्यापारियों का काम अच्छा चल पड़ा था । एक दिन जब दोनों व्यापारी सोकर उठे तो आंगन में देखा कि दो व्यक्ति खून से लथपथ हुए बेहोश पड़े थे । उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि यह चक्कर क्या है ? लेकिन तभी आवाज आई "दोस्तों यह दोनों चोर हैं । रात को ये दोनों मेरे दोस्तों का सामान चुराने आये थे, मुझे मजबूर होकर इनके साथ ऐसा करना पड़ा, वरना मेरी दोस्ती कलंकित हो जाती ।" एक व्यापारी ने कहा, किस तरह तुम्हारा शुक्रिया अदा करूँ दोस्त कुछ समझ नहीं आता । हम तो तुम्हारी दोस्ती की तारीफ भी किसी के सामने नहीं कर सकते ।" इस पर प्रेत फिर धीरे से हंसा । कुछ दिन बाद एक व्यापारी प्रेत के कमरे में गया और कहने लगा, "प्रेत दोस्त अब हम कुछ दिनों के लिये गांव जाना चाहते हैं । मेरी लड़की की शादी है, चाहो तो तुम भी चल सकते हो ।" थोड़ी देर में प्रेत की आवाज आई, "हां मैं जानता हूं कि तुम्हारी लड़की की शादी है, इसलिये मैं भी तुम्हें कुछ देना चाहता हूं । देखो वह सामने कोने में एक पोटली पड़ी है, यह मेरी तरफ से तुम्हारी लड़की के लिये तोहफा है । जब कभी मैं जिन्दा था, तो अपनी लड़की के लिये यह सब कुछ किया था । वैसे विश्वास करो यह मर अपना है । जिन्हें मैंने जमीन में गाड़ दिया था और अब निकाल कर लाया हूं ।" व्यापारी ने पोटली उठाई और देखा उसमें कुछ जेवर थे । व्यापारी की आंखें कुछ नरम हो गई और कहने लगा, "दोस्त पहले ही काफी अहसान थे तुम्हारे, इसकी क्या जरूरत थी ।" इतना कहने के बाद वह वहां रुका नहीं ।

दोनों व्यापारी अब गांव चले आये थे । उनके साथ उनका प्रेत दोस्त भी साथ था, जिसने अपना डेरा उनके मकान के पास एक पीपल के पेड़ के ऊपर लगाया हुआ था । उस व्यापारी ने अपनी लड़की की शादी बड़ी धूमधाम से की । जिस चीज की भी उसे जरूरत पड़ती थी, वह पीपल के पेड़ के पास जाकर अपने दोस्त से कह आता था । शादी करने के बाद तीनों फिर वापस शहर आ गये । एक दिन अचानक प्रेत के कमरे से कराहने की आवाज आ रही थी । एक व्यापारी ने पूछा, "क्यों दोस्त क्या हुआ, क्या कहीं दर्द है ?" थोड़ी देर बाद प्रेत की दर्द भरी आवाज आई, "दोस्तों आज एक तांत्रिक ने मेरे साथ बहुत बुरा किया है, मेरा सारा शरीर चाकू से छलनी कर दिया है ! शायद अब के बाद मैं तुमसे ना मिलूं । परन्तु मैं भी उस तांत्रिक को छोड़ूंगा नही । मैं तुमसे आखिरी बार मिलने आया था, अच्छा दोस्तों अलविदा !" इतना कहने के बाद आवाज नहीं आई । दोनों व्यापारी लगभग चीख पड़े, "दोस्त-दोस्त कहां हो तुम ।" परन्तु उस दिन के बाद उनका दोस्त वापस नहीं आया । जब कभी उसकी याद आती थी, दोनों रो पड़ते थे, और सोचते थे कि लोग कितने निर्दयी होते हैं, किसी को मरने पर भी चैन से नहीं रहने देते । ●



तर्क-कुत

तर्क : वो मुझे देखकर जलता है
कुतर्क : जलते वक्त पानी डाल दि
तर्क : रोते क्यों हो ?
कुतर्क : आंसू ज्यादा हो गये हैं ।
तर्क : उसे क्यों मारते हो ?
कुतर्क : मरना मना है तो कल करूंगा ।
तर्क : जिस गली में तेरा घर बलमा—?
कुतर्क : उस गली में निश्चय ही पा होगा ।
तर्क : जब-जब तू मेरे सामने आये
कुतर्क : तो कुत्ते जरूर भौंकेंगे ।
तर्क : चाहे कोई मुझे जंगली कहे- तो कहता रहे…?
कुतर्क : पर गधा न कहे क्योंकि मु आती है ।
तर्क : गंगा घाट का पानी पिया सबको मैं पानी पिलाऊंगा…
कुतर्क : जी हां…समझे नहीं आप पैसे गिलास में पानी वा लगाते हैं ।
तर्क : हमको तुमसे हो गया है प्य करें…?
कुतर्क : सिर पकड़कर रो लो…या झ सड़कों पर ।
तर्क : हमको न बुलाना ओ जाने आखरी सलाम लेते जाना…
कुतर्क : और अगर फिर मिलना चिड़ियां घर आ जाना ।
तर्क : दीवाने है दीवानों को चाहिये…?
कुतर्क : सोने को फुटपाथ और प दीवाना चाहिये…।
तर्क : घुंघरू की तरह बजता ही मैं…?
कुतर्क : तुम टीन का डब्बा और ले साथ मैं बन्दर…।
तर्क : तुम सब चारसौ बीस हो ।
कुतर्क : नहीं साहब । फिर से गिनिये
तर्क : मैंने यह काम करने का ठेका है क्या ?
कुतर्क : मजदूर होकर छोटा मुंह ब मत करो ।

तर्क-कुतर्क
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



अगले सप्ताह एक और लाजवाब सवा... जिए।

चना कुरमुरा

● क्रिकेट के पितामह डाक्टर डब्लयू-सी ग्रेस हर प्रकार से पिच पर जमे रहने का प्रयत्न करते थे। प्राय: वह अम्पायरों पर भी रोब डालकर निर्णय अपने पक्ष में करवाने से नहीं चूकते थे। उनके बारे में कई कहानियां प्रचलित हैं। एक बार डाक्टर ग्रेस इंगलैंड के छोटे- से गांव में खेलने गये। लोग डाक्टर ग्रेस के नाम से ही उमड़ पड़ते थे। डाक्टर ग्रेस ने अम्पायर से गार्ड लिया। स्थानीय बॉलर ने पहली गेंद फेंकी और तीनों स्टम्पस दूर जा गिरे। डाक्टर ग्रेस ने मुस्करा कर बॉलर को देखा और बोले, "बहुत अच्छी ट्रायल गेंद फेंकी तुमने! चलो अब असली युद्ध किया जाये।"

● एक बार शाम का अंधेरा घिर रहा था। ग्रेस की टीम हार के कगार पर थी। लाइट कम होने की अपील का अम्पायर पर कोई असर नहीं हो रहा था। अचानक डाक्टर ग्रेस अम्पायर को देख कर चिल्लाने लगे! अम्पायर उनके पास गया और पूछा कि क्या बात है? ग्रेस ने उत्तर दिया, "शुक्र है यह तो आप हैं अम्पायर साहब! माफ कीजिए आपने सफेद कपड़े पहन रखे हैं न इसलिए मैं अंधेरे में आपको भूत समझ बैठा।'

● अम्पायर भी डाक्टर ग्रेस की चालाकियों से परिचित हो चुके थे। एक बार ग्रेस बैटिंग कर रहे थे। बॉलर की गेंद स्टम्प्स के ऊपर से एक गिल्ली को गिराते हुए निकल गई। ग्रेस ने मुड़कर गिरी गिल्ली को देखा लेकिन पैविलियन लौटने का कोई इरादा जाहिर नहीं किया। दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए वे अम्पायर से बोले, 'आज हवा बहुत तेज चल रही है।' कहने का अर्थ यह था कि गिल्ली हवा के कारण गिरी है। अम्पायर ने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया, 'हां! आप पैविलियन जाते समय टोपी को पकड़े रहना वर्ना उड़ जायेगी।'

● एक बार मंसूर अली खाँ पटौदी से एक पुस्तक में आटोग्राफ देने के लिए कहा गया। उस पुस्तक में उनके पिता के भी आटोग्राफ थे। आटोग्राफ के साथ पिता पटौदी ने एक टिप्पणी भी लिखी थी, 'मुझे कभी घोड़ों (रेस वाले) और नारियों से लगाव नहीं रहा।'

मंसूर अली खां ने भी हस्ताक्षर के साथ टिप्पणी लिखी, 'घोड़ों के साथ तो मुझे भी नहीं है।'

● आस्ट्रेलिया में आलराउंडर कीथ-मिलर खेल से रिटायर होने के बाद पत्रकार बने। एक बार इंगलैंड व दक्षिण अफ्रीका के बीच हुए मैच में अम्पायर ने एक साफ एल. बी. डब्ल्यू. की अपील नहीं मानी। कीथमिलर ने उसके बारे में समाचार पत्र में छापा, 'इतना तो मैं कह सकता हूँ कि गेंद आफ स्टम्प को नहीं लगती। लेकिन बीच वाले स्टम्प के बारे में कह नहीं सकता।'

● यार्क-शायर के स्पिनर जौनी की एल. बी. डब्ल्यू. अपील को अम्पायर ने नहीं माना तो जौनी अम्पायर के पास जाकर बोला, 'आपका क्या ख्याल है बॉल कहाँ जाकर लगी है?' अम्पायर ने कहा, 'मैं क्या जानूं? बीच में बैट्समैन की टाँग जो थी।'

● आस्ट्रेलिया का फॉस्ट बॉलर अर्नी बहुत मजाकिया तबीयत का था। एक बार टैस्ट मैच में अम्पायर ने एक ही ओवर में अर्नी की आठ गेंदें नो बाल करार दे दीं। अगले ओवर में नौ गेंदें नो बाल हो गयीं। लंच के बाद मैदान में आते समय अर्नी ने अपने साथियों को आश्वासन दिया कि अम्पायर उसे अब और नो बाल नहीं कर पायेगा। उसका कहना था, 'मैं अभी जाकर अम्पायर को बताऊंगा कि उसकी बीबी पैविलियन में आकर बैठी है। उसकी बोलती बंद हो जायेगी। जब बोलती ही बंद होगी तो वह मुझे नो बाल कैसे कहेगा?'

● अर्नी खेल से अवकाश लेने के बाद रेडियो कमेंटेटर बने। एक बार मैच में एक बहुत मोटा स्पिनर खेल रहा था। बैट्समैन ने बॉल हिट किया। वह मोटा स्पिनर बॉल के पीछे दौड़ा। अर्नी ने कमेंट्री दी, 'इस स्ट्रोक के बैट्समैन को तीन रन मिलेंगे। एक स्ट्रोक मारने का, दूसरा झुककर बाल उठाने का और तीसरा जब तक वह उठकर बाल विकेट कीपर की तरफ फेंकेगा।"

● एक बैट्समैन से एक मैच में बहुत रद्दी फील्डिंग हुई। कई कैच छूट गये। शाम को उसे समाचार मिला कि हस्पताल में उसकी पत्नी ने लड़के को जन्म दिया है। वह दौड़ा-दौड़ा गया और बच्चे को चूमने के लिए उठाने ही वाला था कि नर्स ने बच्चा झपटकर छीन लिया, 'कहीं आपके हाथ से यह भी छूट कर गिर गया तो?"

● स्पिनर वेरिटी के ओवर की छ गेंदों पर बल्लेबाज होरेस ने तीन रन झा दिये! तीन चौके तथा तीन छक्के डाले विकेट कीपर वुड ने वेरिटी को सलाह दी ऐसी ही गेंद बाजी किये जाओ। बैट्समैं को तुम्हारी गेंदें समझ में नहीं आ रही हैं वह समझ नहीं पाता कि चौका मारे य छक्का।'

● इंगलैंड में क्रिकेट के शौकीन षारवा के बाप-बेटे को मैच देखना था। बाप पहले पहुचा, अपने लड़के के लिए साथ वाली सी रोक ली! बेटा आधा घंटा बाद आया, व घबराया हुआ था। आते ही बोला, 'डैडी गजब हो गया, घर में आग लग गयी है।'

नजरें खेल पर ही जमाकर बा बोला'...'ऐSSS'

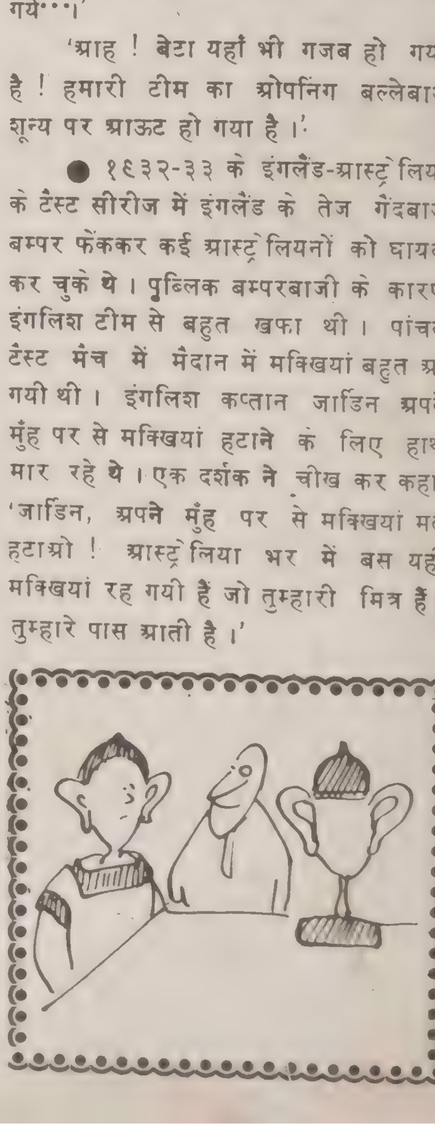
बेटा, 'मम्मी जल गयी! उन्हें हस्पताल ले गये।'

'अच्छा।'

'बीमे के कागजात भी आग मे जल गये...।'

'आह! बेटा यहां भी गजब हो गया है! हमारी टीम का ओपनिंग बल्लेबाज शून्य पर आऊट हो गया है।'

● १९३२-३३ के इंगलैंड-आस्ट्रेलिया के टैस्ट सीरीज में इंगलैंड के तेज गेंदबाज बम्पर फेंककर कई आस्ट्रेलियनों को घायल कर चुके थे। पुब्लिक बम्परबाजी के कारण इंगलिश टीम से बहुत खफा थी। पांचवें टैस्ट मैच में मैदान में मक्खियां बहुत आ गयी थी। इंगलिश कप्तान जार्डिन अपने मुंह पर से मक्खियां हटाने के लिए हाथ मार रहे थे। एक दर्शक ने चीख कर कहा, 'जार्डिन, अपने मुँह पर से मक्खियां मत हटाओ! आस्ट्रेलिया भर में बस यही मक्खियां रह गयी हैं जो तुम्हारी मित्र हैं तुम्हारे पास आती है।'



ज़रा सोचिये

आपकी सेहत वाले सारे डाक्टर बाल टेढ़ा होने पर भी डाक्टर के पास जाने की सलाह देते हैं।

जब हमें डाक्टर के पास जाना ही है तो इन साहेबान का टी० वी० पर आकर बीस मिनट खराब करने में क्या तुक है?

कविताएं

तौल

—गोपाल चौरसिया

चुनाव चक्कर का भाषण ।।
जैसे मुफ्त का राशन ।।
खूब मुंह—खोलकर,
नेता ने बांटते कहा—
पिछला शासन
हमारा प्रशासन
जरा तौलिए······?
'हम ग्रापके साथ हैं !!'
'किन्तु-एक क्रुद्ध युवक बोला'—
क्या खाक तौलें ?
वे नाग-नाथ थे,
ग्राप सांप-नाथ हैं ।

ईमानदारी

सात हजार रुपयों के—
गवन के ग्रपराधी को,
जाँच ग्रायोग,
साफ-साफ बचा गया !
ऊपर से तुर्रा यह कि
वह ग्रपनी लम्बी जाँच-पड़ताल
की प्रक्रिया के नाम पर,
सम्बन्धित मंत्रालय के साथ,
हाफ-हाफ पचा गया ।।

दायरा

ग्राज की राजनीति,
डूबते व्यक्ति का—
तिनके की ग्रोर देखना है !
मरे,
पराया या निजी,
मृत्यु के कारणों में,
ग्रपने प्रतिद्वन्द्वी नम्बर एक को,
ग्रवश्य लपेटना है ।

स्पष्टीकरण

—जय प्रकाश दुबे 'राज'

उनका दांवा
उनमें
कोई मतभेद नहीं है !
चलनी कहे
उसमें भी तो
छेद नहीं है !!

खांसी गुण की खान

रामचन्द्र शर्मा 'दुनियादार'

छोटा हो चाहे बड़ा, रोग सुखाता जान;
किन्तु हमको तो लगे, खांसी गुण की खान ।
खाँसी गुण की खान रात भर हमें जगाये;
हमें जागता देख चोर न ग्राने पाये ।
'दुनियादार' कमजोर करे लाठी पकड़ाये;
जिसे देख नजदीक कोई कुत्ता न ग्राये ।

पहचान

नारायण श्रीवास्तव

'ग्रफसर के
बंगले की
पहचान ?'
बंगले के
दरवाजे पर
लिखा रहता है
'कुत्ते से सावधान ।'

चमचा

नेता नेता
सब कहें,
चमचा कहे
न कोय—
नेता के
दरबार में
चमचा कहे
सो होय ।

ग्रज्ञात

एक मतदाता
जोड़कर हाथ,
लगा पूछने मंत्री से-
नेताजी क्या है बात,
कि ग्रभी तक,
ग्रापका समाज वाद नहीं ग्राया ?'
नेताजी बोले—
पता नहीं कहीं ट्रेन फेल तो-
नहीं हो गई,
ग्रन्यथा उसने मेरा साथ पाया था.
चुनाव के समय
वह मेरे संग ही ग्राया था !

इशारा

वे
ग्रपने उच्च ग्रादर्शों के कारण,
सभी को ऊपर उठाने में,
इतने साहस से जुट गये ।
कि उनका इशारा पाते ही,
सभी वस्तुग्रों के मूल्य,
स्वतः ही ऊपर उठ गये ।।

—आज़ाद रामपुरी

ग्रन्तर

वे,
निर्भय होने में,
कहां डर रहे हैं ।
दूसरी ग्राजादी के—
शाइन बोर्ड को टाँगकर,
पक्षपात की दुकान में बैठ,
स्वार्थ से घर को भर रहे हैं ।

ग्रसर

सफेद बालों का ग्रसर
पत्नी लग रही है बहू
पति लग रहे हैं ससुर ।

कृपया

लिफट लेने वाले इस
कार में अपनी इज्जत
साथ लेकर न बैठें

जहां ग्राप उतरेंगे वहां ग्रापकी इज्जत
भी उतारनी पड़ेगी

हमारी मांगें भी पूरी करो...

आज चारों तरफ हड़तालों और ताला-बन्दियों का मेला सा लगा है । हर कोई कुछ न कुछ मांग रहा है । लेकिन अभी भी समाज में कई वर्ग ऐसे हैं जो हड़-ताल पर नहीं हैं और न ही कोई मांगें पेश कर रहे हैं । हम चाहते हैं कि वह भी बहती गंगा में हाथ धो लें. अपनी मांगें लेकर सामने आयें ।

उदाहरण के लिये ····

रेलों में बगैर टिकट य
करने वाले

हमारी मांग

बगैर टिकट यात्रा करने वा
सुविधा के लिये स्पेशल गा
चलाई जायें जिनमें टी. टी. का
निषेध हो ।
और गाड़ी स्टेशन
के बाहर ही रुक
जाये ताकि यात्री
उतर कर नौ दो
ग्यारह हो सकें ।

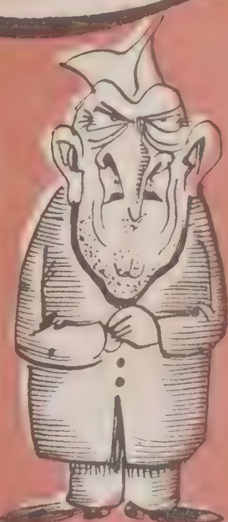


नेता जी

मेरी मांग

हमें चमचा भत्ता दो

हमें नेतागीरी बनाये रखने के लिए दर्जनों चमचे पालने पड़ते हैं ।



शनिदान मांगने वाली

हमारी मांग

हफ्ते में शनिवारों की संख्या बढ़ाओ ।

कम से कम तीन शनिवार एक सप्ताह में होने चाहिएं ।



कोढ़ी भिखारी

हमारी मांग

सभी सड़कों पर भिखारियों के लिए अलग लेन बनाओ ।

(जिस प्रकार बसों के लिये बस लेन होती है और पैदल चलने वालों के लिये फुटपाथ) ।



बहू जलाने वाली सास

मेरी मांग

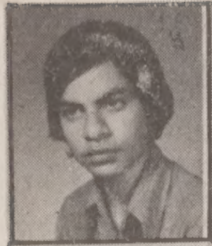
हमें दहेज न लाने वाली बहू को जलाने के लिये

राशन कार्ड में मिट्टी के तेल का अतिरिक्त कोटा दिया जाये ।





दस नम्बरी
हमारी मांग
सभी दस नम्बरियों को थाने के निकट सरकारी मकान एलाट किये जायें।
ताकि हर हफ्ते थाने हाज़िरी देने में सुविधा हो।
10
सैंध मार
हमारी मांग
मकान कच्ची ईंटों के बनाओ ताकि सैंध लगाने में हमें आसानी हो।
आवारा
हमारी मांग
सभी सरकारी नौकरियों में आवारा लड़कों के लिये २०% स्थान सुरक्षित करो।
बच्चा
मेली मांग
मुदे तंदा मामा लादो।
नईं तो मैं दूध नईं पीऊंगा।
परीक्षार्थी
हमारी मांग
परीक्षाओं में पूंजीवादी व्यवस्था समाप्त करो।
सभी परीक्षार्थियों में नम्बर बराबर बांटो।
बैट्स मैन
मेरी मांग
फुलटॉस, लूज, बॉल व नो बॉलों की संख्या बढ़ाओ।
फाँसी का सजायाफ्ता
मेरी मांग
मेरी मौत के शोक में सारे देश में एक दिन की छुट्टी कर दीजिए
सारकारी झंडे झुका दिये जायें और रेडियो पर मातमी धुनें बजें।

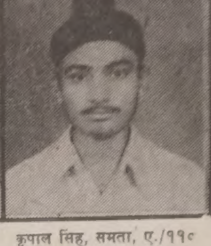

जितेन्द्र नागपाल, एच/२६९, रामनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.), १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना, बड़ों का आदर करना ।


राजकुमार 'राजा', जगदीश जनरल स्टोर्स, बैरन बाजार रायपुर (म. प्र.), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता, सबके साथ हिल-मिल कर रहना ।


विजय कुमार मेगानी, जगदीश जनरल स्टोर्स, बैरन बाजार रायपुर (म. प्र.), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, कहानियाँ सुनाना ।


छत्रपति शिवाजी निमकर, पुत्र श्री हर प्रकाश निमकर ४६ सराय रहमान अलीगढ़, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना पत्र-मित्रता, हंसना ।


अरविन्द भाटिया, १३ एफ. ब्लाक, १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना, अच्छे आदमियों का आदर सतकार करना ।


कृपाल सिंह, समता, ए./११० लारेंस रोड दिल्ली-३५ १६ वर्ष, टिकट संग्रह करना, फिल्म देखना, अच्छा खाना खाना ।


महेन्द्र … वान, … रोड … कार … मित्रता, …


एस. के. 'राजा' ५४/३ खुराना भवन जींद, १८ वर्ष, रेडियो सुनना, दीवाना पढ़ना, घूमना, बच्चों को कहानी सुनाना ।


जि. रत्न, स्थापित ७/६६३ मिससेन थान काठमांडो, २४ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, उपन्यास पढ़ना ।


लक्ष्मण 'डेभील', ठुठुबारी गोरखपुर (उ. प्र.); २० वर्ष, मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, छोटे बच्चों को बहुत प्यार करना ।

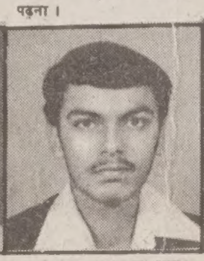

महेश चन्द्र नागर, सौंदा हजारी बाग (बिहार), १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, किताब पढ़ना, दिवाना पढ़ना, हाथी खेलना ।


अशोक मारती, ८६३ गऊशाला रोड लुधियाना, २४ वर्ष, घूमना, उपन्यास पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, मोटर कार चलाना ।


राजसायमी, २/६४ झोदेंहुसाल (नेपाल), १४ वर्ष, फुटबाल खेलना, घूमना, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता, करना ।

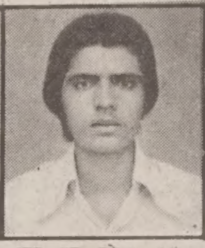

बलराम … भवन … (म. प्र. … पढ़ना, … कामेटी …


हंसराज अरोरा, सिवल सिनेमा रोड रुद्रपुर नैनीताल, १८ वर्ष, गम्भीर कहानी सुनना, दीवाना पढ़ना, पत्र-लिखना ।


अजय राजा, सुपुत्र डा. राजा, ऐश बाग लखनऊ, १५ वर्ष, टिकट संग्रह, हंसी मजाक करना, गाना गाकर सबको दीवाना बनाना ।


नरेश कुण्णानी, बैरन बाजार, चर्च के पास, रायपुरा (म. प्र.), १३ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फिल्में देखना, तास खेलना, दोस्ती करना ।

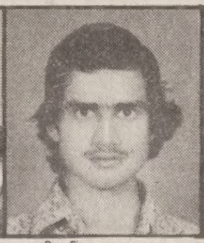

दत्त कुमार 'साहिल', ६६६ चौक शेखां मोगा (पंजाब), २६ वर्ष, दुर्घटना को करीब जाकर देखना, गऊ सेवा करना ।


आर. एस. रखेजा, १/५० एस. एन. पुरी न्यू दिल्ली-६५, २१ वर्ष, लडकों से मित्रता, फोटो ग्राफी, और बाली-बाल खेलना ।


राजकुमार, ३/६००८ देवनगर करोल बाग, नई दिल्ली-५, २६ वर्ष, चित्र-कला व लड़के और लड़कियों से स्वच्छ पत्र-मित्रता ।

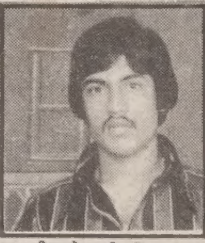

चन्द्र प्र… कालोनी … १६ वर्ष … सुनना … पढ़ना ।

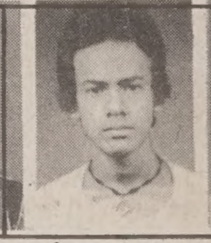

विद्याधर जैन, ८१ सी. ब्लाक, गंगानगर (राजस्थान), १६ वर्ष, फिल्में देखना, किताब पढ़ना, पत्र-मित्रता, रेडियो सुनना ।


दलजीत सिंह सुपुत्र बलवन्त सिंह, नई सब्जी मण्डी हिसार (हरियाणा), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता, फिल्म देखना, घूमना, पढ़ना ।

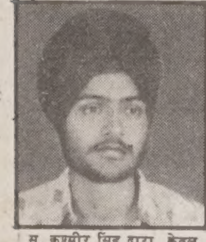

कन्हैया माधवानी, बंजारी रोड, रायपुर (म. प्र.), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, हंसीमजाक, खुद रोकर दूसरों को हंसाना, शायरी करना ।


विनोद राजपाल 'रतन' ३७६, रिकाब गंज फैजाबाद (उ.प्र.), १९ वर्ष, दीवाना पढ़ना, गेंदबाजी करना, कामेंट्री सुनना ।

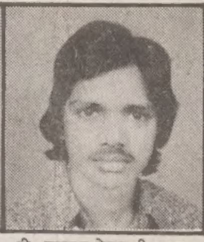

जगदीश होतवानी, विशनदास दासुमल क्लाथ मर्चेन्ट, गोल बाजार रायपुर (म० म०), २० वर्ष, पत्र-मित्रता माता-पिता की सेवा करना ।

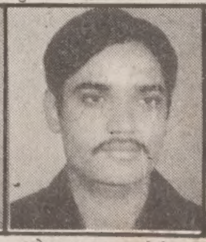

मधु श्रेष्ठ, नागपोखरी २०/१२५ काठमांडो (नेपाल), १५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फुटबाल खेलना, कहानी पढ़ना, फोटो जमा करना ।


प्रहलाद … कालोनी … १६ वर्ष … खेलना, … मिन्टन …


स. कश्मीर सिंह द्वारा केवल कृष्ण प्रवेश कुमार, नेता जी सुभाष मार्ग रुद्रपुर, (नैनीताल), १८ वर्ष, पढ़ना और गरीबों की सहायता करना ।


बी. आर. धर्मानी, धर्मानी भवन बैरन बाजार रायपुर, १४ वर्ष, दिवाना पढ़ना, बड़ों की खोज करना, सबका आदर करना ।


बी. साइमन जेकब बी. काम, सड़क नं. १२, क्वाटर नं. १३/३५. सेक्टर-१, मिलाई-१, दुर्ग (म. प्र.), १७ वर्ष, प्रेम करना, उपन्यास पढ़ना ।


अशोक कुमार, मोतीराम ताराचन्द दाल मिल किशनपाल (जयपुर), २१ वर्ष, पत्र-मित्रता, अपनी सेहत का ध्यान रखना ।


अरविन्द कुमार पंडित, ३/५ विजय नगर इन्दौर (म. प्र.), १७ वर्ष, तर्क करना, क्रिकेट खेलना, कहानी लिखना, फिल्म देखना ।


मदन लाल प्रधान 'जवान', प्रधान प्रिन्टिंग प्रेस, साकोठा टोल, ११ भक्तपुर नेपाल, २० वर्ष, कसरत करना, उपन्यास पढ़ना, पत्र-मित्रता ।


मनोहर … बाजार … (म. प्र. … फिल्म … दीवाना …


विनोद कुमार अरोरा, म. नं. १/२० गोपाल नगर, सहारनपुर (उ० प्र०), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता, डाक-टिकट संग्रह ।


अनिल गुरबक्शाणी, मु. पो. रविग्राम, रायपुर (म. प्र.), १४ वर्ष, पत्र-मित्रता, क्रिकेट खेलना, फिल्में देखना, दीवाना पढ़ना ।


राजकुमार मेत्रपाल, राजेश किराना स्टोर्स, बैरन बाजार रायपुर, १३ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फिल्म देखना, पत्र-मित्रता करना ।


मुकेश कुमार अंदा, अमर [illegible] केन्द्र बैरागढ़ (भोपाल) म. प्र., २० वर्ष, फोटो खिचवाना, फिल्में देखना ।


पुष्पराज बसन्त द्वारा श्री धर्मराज वर्मा, मानिक चन्द तलाब, अनीशाबाद पटना, १५ वर्ष, फिल्म देखना, फोटो खींचना, मशीनी कार्य ।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये । मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा ।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ________

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित । प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता ।

(पृष्ठ १६ से आगे)

ी देर तक तो वह लाल चक्कर बड़ी
घूमता रहा और फिर मशीन की
फिस्स हो गयी । इधर उनके
रहे थे और टंकी जी का बुरा हाल
-रहकर उनको पेट पर बड़ा गुस्सा
था ।
खिर दिन ढला और वह हसीन
गई जिसकी प्रतीक्षा में कोमल
ई वर्ष गुजारे हैं । बाहर उनके लिए
ाई घोड़ी तैयार खड़ी थी । सभी
यगी के बाद दुल्हे मियाँ बाहर
ब समस्या यह थी कि घोड़ी पर
न । कोई भी इस शुभ कार्य के लिए
हीं हो रहा था । अन्त में उनके
काम आये । उनका घोड़ी पर
कि घोड़ी की जीभ बाहर आ
बुरी तरह हांफने लगी । वह भी
थी, न जाने भगवान किस जन्म
ले रहा है । अभी तक तो उस पर
बैठा करते थे, आज न जाने
दिया । बारात अब गांव की
रही थी । अभी थोड़ी दूर पहुँचे
ड़ी की आँखें बाहर आती दिखाई
वह वहीं लुढ़क गई । उसके ऊपर
मल जी, उनको भी घोड़ी का
ाना पड़ा और लुढ़कते हुए सड़क
जा लगे । सभी लोग यह सोच
वे हंसें या रोयें । घोड़ी में अब
नहीं दिखाई दे रहा था कि वह
मत गांव तक पहुँच जायेगी । किसी
री घोड़ी मँगवाई गई । इसके साथ
हुआ जो कि पहली वाली घोड़ी के
था । कोमल जी का तो गिरने
हीं बिगड़ रहा था, हां सड़क जरूर
से टूट गई थी । आखिर गिरते-
पहुंच ही गये । सभी सोच रहे
रात के स्वागत के लिए गाँव के
लड़की वाले मिल जायेंगे । परन्तु
किसी का नामो-निशान ही नहीं
गाँव में चक्कर लगा लिया, कहीं
घर नहीं मिला जिसके यहाँ शादी
लाला घोंचूमल जी के दिमाग में
झ आई कि वे लोग इतनी जल्दी
हो गये थे । जब कोमल जी को
कि यहाँ तो लड़की वाले ही
तो उनके चेहरे पर बाढ़ आ गई ।
कि रुकने का नाम ही न ले रहे थे ।
ने बहुत ही समझाया कि अब रोने
ायदा नहीं है । तभी कोमल जी के
न जानेक्या आयी, उन्होंने वहीं से
ानी शुरू कार दी । शायद वे सोच
घर पहुंचते-पहुंचते जरूर हल्के
और घर कोई ना कोई रिश्ता
र बैठा होगा ।



होरीलाल कनोजिया—नासिक : यदि आप को एक दिन का राजा बना दिया जाय तो आप क्या करेंगे ?

उ० : एमर्जेन्सी लगा दूंगा ताकि १६ महीने और राजा बना रह सकूं ।

भाँवरदास बागवानी—नयापारा : गरीबचंद जी मेरी पालतू बिल्ली आपको बहुत चाहती है. आप अपनी दावत में मेरी बिल्ली को बुलायेंगे ?

उ० : अपनी बिल्ली से पूछ लीजिये क्योंकि मेरी दावत में मेरे रामपुरी कुत्ते भी होंगे ।

सतीन्द्र जैन "सुदर्शी"—जबेरा (म० प्र०) गरीबचंद जी आप गर्मी में पंखे की हवा खाते है या कूलर की ?

उ० : मेरा बिल एयरकंडीशंड है । मेरे बिल के पास रहने वाले दूसरे चूहे मेरी तरक्की देख ठंडी आहें भरते रहते हैं । उन्हीं ठंडी आहों से मेरे बिल में एयरकंडीशनिंग हो जाती है ।

रामचन्द्र शर्मा—आबूरोड : गरीब चन्द जी, कृपया यह बताने का कष्ट करें कि "मेरी जिन्दगी में बहार कब आयेगी !"

उ० : जब हरे पत्ते आयेंगे जिन पर रिजर्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर हों ।

योगेश संघवी जैन—बेरमो : क्या गरीबचन्द जी यह न्याय है या तमाशा ? मुझ को न स्वर्ग से कुछ मतलब न राष्ट्रपति पद से मतलब है । तो क्यों रह जाऊं नारी विहीन जब जनता राज्य का जमाना है ?

उ० : मैं आपका पत्र जनता पार्टी के अध्यक्ष चन्द्र शेखर से तस्दीक करवा कर नारी निकेतन वालों को भेज रहा हूं । वहीं आपका न्याय होगा ।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : सुना है जानवरों में बुद्धि नहीं होती पर आप तो काफी बुद्धिमान मालूम पड़ते हैं ?

उ० : आपने कहावत सुनी होगी कि जो स्वयं को बुद्धिमान समझता है असल में वही सबसे ज्यादा मूर्ख है । इन्सान खुद को बुद्धिमान समझता है । लेकिन जनसंख्या बढ़ाये जा रहा है । एटम व हाइड्रोजन बमों के अम्बार लगा रहा है । सारांश यह कि स्वयं को समाप्त करने का सारा मसाला इकट्ठा कर रहा है । मजा तो उस दिन आयेगा जब इंसान खुद को नष्ट कर देगा और हम तमाशा देखेंगे । उस दिन साबित हो जायेगा कि बुद्धिमान कौन है ।

प्र० : क्या आप मेरे दोस्त नहीं बन सकते ?

उ० : अभी कौन सा आपका दुश्मन हूं मैं ?

प्र० : बजाय बिल्ली से डरने के आप बहादुरी से मुकाबला क्यों नहीं करते ?

उ० : मुकाबला करने पर हमें गोल्ड मैडल थोड़े ही मिलेगा ?

प्र० दिल की बातें किससे कहनी चाहियें ?

उ० किसी से नहीं कहनी चाहियें । कह दिया तो वह दिल की बात थोड़े ही रह गयी ? वह तो जनता पार्टी का मामला बन जायेगा ।

प्र० : दुख सुख में इन्सान एक समान किस प्रकार रह सकता है ?

उ० : इसकी ट्रेनिंग राजनारायण जी से ली जा सकती है । वह गधे पर भी उसी शान से सवारी करते हैं जिस शान से घोड़े पर ।

राकेश कुमार दुआ—कैलाश नगर : गरीब चन्द जो, मेरे पास नौकरी कर लो, अमीर चन्द बना दूंगा ?

उ० : नौकरी तो मैंने अपने बाप की भी नहीं की । बाप लाख कहता रहा बेटा अनाज के सरकारी गोदाम में चूहों का सुपरवाइजर बन जा लेकिन मैंने नहीं माना । आजादी सबसे बड़ी चीज है ।

धर्मेन्द्र-तारा दुर्धा—रामपुर : गरीबचन्द जी क्या यह सच है कि आपकी शादी की बात हेमा मालिनी के कमरे में रहने वाली चूहिया से चल रही है ?

उ० : आपने ठीक ही सुना । बात बन भी गयी थी लेकिन ऐन मौके पर धर्मेन्द्र ने टांग अड़ा कर काम खराब कर दिया । मेरा तो क्या बिगड़ा हाँ उसने उस चुहिया की जिन्दगी बरबाद कर दी ।

तसनीम अहमद खां—मुरादाबाद : मुझे चूहों से डर लगता है, मैं क्या करूं ?

उ० : अजी आप क्या हम से बड़े-बड़े डरते हैं, किस्सा कुर्सी का फिलम में हमारा कितना बड़ा रोल था । खाद्य मंत्री सुरजीत सिंह बरनाला से ही पूछ लीजिये हमारा जिक्र आते ही उनके पसीने छूट जाते हैं ।

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर : आप दूध गिलास में पीते हैं या बोतल में ?

उ० : न गिलास में न बोतल ! मैं तो मजे में पी जाता हूं ।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

Regd. No. D (D) - 275

